हरिभूमि
हिसार भूमि
रोहतक, रविवार, 10 अगस्त, 2025

तापमान

अधिकतम 30 .3 डिग्री
न्यूनतम 26 .0 डिग्री

12 पुलिस ने आरोपी से 35 तोले सोने के गहने व अन्य सामान किया जब्त

12 डीपीएस की हर्षिका तथा मृदुल ने पाया द्वितीय स्थान

खबर संक्षेप

बीड़ बबरान धाम में आज सजेगा दरबार

हिसार। महाभारतकालीन बीड़ बबरान धाम में कल श्याम बाबा का संकीर्तन किया जाएगा। सायं 4 बजे से रात्रि 7 बजे तक चलने वाले इस संकीर्तन में भजनों के माध्यम से श्याम बाबा की महिमा का गुणगान किया जाएगा। संकीर्तन के लिए श्याम बाबा के दरबार को विशेष रूप से सजाया जाएगा। इस संकीर्तन में पधारने वाले भक्तगण श्याम बाबा के दरबार में अर्जी लगाकर मन्नत मांगेंगे। धाम के पुजारी विनय शर्मा ने बताया कल आयोजित होने वाले अर्जी संकीर्तन में विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालु पहुंचेंगे और अपने इष्ट श्याम बाबा के समक्ष अर्जी लगाकर कष्टों के निवारण की कामना करेंगे।

रुद्राभिषेक व 11 कुण्डीय महायज्ञ की पूर्णाहूति कल

हिसार। जगतगुरु त्रिपुरा पीठाधीश्वर चक्रवर्ती यज्ञ सम्राट श्रीश्री 1008 श्री हरिओम जी महाराज के सान्निध्य में मणिकूट पर्वत ऋषिकेश पर पावन श्रावण मास में द्वादश ज्योतिर्लिंग के अभिषेक व एक माह से निरंतर जारी महायज्ञ की पूर्णाहूति सोमवार 11 अगस्त को होगी। पूर्णाहूति कार्यक्रम में हरियाणा से काफी संख्या में सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक गणमान्य भाग लेंगे। यह जानकारी मां मोक्षदायिनी गंगा धाम ट्रस्ट के प्रचार मंत्री जेपी कौशिक ने दी।

जन्माष्टमी पर झांकी एवं डांस स्पर्धा 16 को

आदमपुर। मानव कल्याण सेवा ट्रस्ट द्वारा जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में झाकी एवं डांस प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। ट्रस्ट के प्रधान विनोद वर्मा ने बताया कि बताया कि प्रतियोगिता में 8 साल से 15 साल तक के बच्चे भाग ले सकते हैं तथा प्रतियोगिता में भगवान श्री कृष्णा राधा, देश भक्ति, धार्मिक झांकियां के प्रदर्शन व सांस्कृतिक व देश भक्ति डांस किया जा सकता है। विजेताओं को ट्रस्ट की तरफ से स्मृति चिन्ह व नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा। भाग लेने वाले बच्चे संस्था से संपर्क करके अपने नाम 14 अगस्त तक लिखा सकते हैं।

मनरेगा सामाजिक अंकेक्षण के तहत सभा

आदमपुर। खंड विकास अधिकारी कार्यालय में ग्राम पंचायत आदमपुर में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम मनरेगा के अंतर्गत वर्ष 2024-25 में हुए कार्यों की सामाजिक अंकेक्षण ग्राम सभा का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी आदमपुर कीर्ति सिरोहीवाल के दिशा-निर्देशन में संपन्न हुआ। ग्राम सभा में वीआरपी सीमा द्वारा मनरेगा योजना के तहत किए गए कार्यों की रिपोर्ट ग्रामवासियों के समक्ष प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर बीआरपी जसदीप कौर द्वारा योजना के उद्देश्यों, लाभों एवं श्रमिकों के अधिकारों की विस्तृत जानकारी दी गई।

जेल प्रशासन ने रोली, अक्षत के साथ राखी व मिठाई की भी व्यवस्था की

रक्षाबंधन पर सलाखें भी नहीं रोक पाईं भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को

हिसार। जेल में बंद अपने भाइयों को राखी बांधने से पहले दस्तावेज चैक करवाती बहनें। फोटो: हरिभूमि

हिसार। जेल में बंद अपने भाइयों को राखी बांधने के लिए लाइन में लगी बहनें।

सेंट्रल जेल वन व टू में बहनों ने भाइयों को बांधा रक्षा सूत्र

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

जिलेभर में रक्षाबंधन का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। बहनों ने अपनी भाइयों की कलाई पर राखी बांधी और उनकी लंबी आयु की कामना की। रक्षाबंधन पर भाई-बहन के इस पवित्र रिश्ते को सलाखें भी नहीं रोक पाईं।

शनिवार को सुबह से ही सेंट्रल जेल वन व टू के बाहर बहनों का तांता लगा हुआ था। जेल प्रशासन ने भी किसी सजाफ्ता कैदी या फिर हवालाती की कलाई सूनी न रहे, इसके लिए अलग से व्यवस्था की हुई थी। राखी बांधने के लिए आने वाली बहनों को किसी प्रकार की कोई परेशानी न हो, इसके लिए जेल प्रशासन ने भी पुख्ता प्रबंध किए हुए थे। हालांकि बहनों द्वारा घर से लाई गई राखियां व मिठाई को जेल प्रशासन ने अंदर ले जाने की अनुमति नहीं दी हुई थी। जेल प्रशासन ने बंदियों और उनकी बहनों के लिए सभी आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की थी। जेल परिसर के अंदर बहनों के लिए बैठने व पानी आदि का व्यापक प्रबंध था। जानकारी के अनुसार सुबह 9 बजे से ही जेल के बाहर मिलने आए लोगों की लंबी कतारें लगी थीं। रक्षाबंधन पर महिलाओं की भारी भीड़ को देखते जेल प्रशासन ने सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए थे। सेंट्रल जेल टू में जेल प्रशासन ने 10-15 महिलाओं के समूह बनाकर उन्हें जेल के अंदर निश्चित स्थान पर बंदी भाइयों को राखी बांधने की अनुमति दी। इस दौरान रोली, अक्षत के साथ राखी और मिठाई की भी व्यवस्था की गई।

थोड़ा भावुक नजर आईं बहनें

बताया जाता है कि 15-20 मिनट की राखी बांधने की प्रक्रिया के बाद बहनों को वापस भेजा जा रहा था। राखी बांधने आई कई बहनों के साथ छोटे बच्चे भी थे, उन्हें भी जेल प्रशासन की ओर से अंदर जाने दिया जा रहा था। अपने भाइयों को राखी बांधने के बाद बाहर आई बहनें थोड़ा भावुक नजर आई।

ज्योति मल्होत्रा ने जेल में पिता को बांधी राखी, पिता से मिलने पर रो पड़ी

हिसार। पाकिस्तान के लिए जासूसी के आरोप में पकड़ी गई यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा के पिता हरीश मल्होत्रा शनिवार जेल में ज्योति से राखी बंधवाने पहुंचे। जेल में पिता को राखी बांधते हुए ज्योति के आंसू निकल आए। इस पर पिता ने ज्योति के सिर पर हाथ रखा और उसे भरोसा दिया कि सब ठीक हो जाएगा, तू चिंता मत कर। बाद में ज्योति के पिता ने जेल से बाहर आकर बताया कि ज्योति का कोई भाई नहीं है। इसलिए, मैं बेटी से मिलने गया था और राखी बंधवाई। ज्योति थोड़ी देर तक रोई। मैंने फिर आशीर्वाद दिया कि कोई बात नहीं, जो हो गया सो हो गया। हरीश मल्होत्रा ने जेल के अंदर की बात बताते हुए कहा कि बेटी से राखी बंधवाकर मैं भी भावुक हो गया। राखी बंधवाकर मिठाई खिलाई। पिता ने कहा कि जिस दिन ज्योति जेल से बाहर आ जाएगी, उसके बाद उसे फुल मिठाई खिलाऊंगा। ज्योति मल्होत्रा के पिता हरीश मल्होत्रा ने कुछ दिन पहले ज्योति की पेशी के दौरान राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, मुख्यमंत्री और राज्यपाल को चिट्ठी लिखकर बेटी को न्याय दिलाने की गुहार की लगाई थी। बता दें कि पुलिस ने ज्योति मल्होत्रा को पाकिस्तान के लिए जासूसी के शक में 16 मई को गिरफ्तार किया था। उस पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 152 और आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम, 1923 की धारा 3, 4 और 5 के तहत जासूसी, राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डालने और गोपनीय जानकारी साझा करने जैसे गंभीर आरोप हैं। गत 4 अगस्त को ज्योति की कोर्ट में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए छठी बार पेशी हुई थी। कोर्ट ने सुनवाई करते हुए ज्योति की न्यायिक हिरासत 14 दिन और बढ़ा दी।

हिसार। सवारियों से खचाखच भरी रोडवेज बस। फोटो: हरिभूमि

दूसरे दिन भी बहनों ने उठाया रोडवेज की फ्री सेवा का लाभ

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

- शुक्रवार की तुलना में बस स्टैंड पर शनिवार को दिखी कम भीड़

रक्षाबंधन के त्योहार पर मुख्य बस स्टैंड पर शनिवार को खासा उत्साह देखने को मिला। हजारों बहनें अपने भाइयों से मिलने और राखी बांधने के लिए बस स्टैंड पर पहुंचीं। शुक्रवार की तुलना में शनिवार को बस स्टैंड पर अधिक भीड़ नहीं थी।

इसके चलते महिलाओं को रोडवेज बसों में आसानी से सीट मिल गई। शुक्रवार की तरह सरकारी समिति संचालकों ने शनिवार को भी महिलाओं से किराया वसूला। कुछ प्राइवेट बस संचालकों ने सरकार के साथ सुर में सुर मिलाते हुए महिलाओं से किराया नहीं लिया। बता दें कि प्रदेश सरकार ने रोडवेज बसों में बहनों व 15 साल तक के बच्चों को शुक्रवार दोपहर 12 बजे से शनिवार रात 12 बजे तक निशुल्क बस यात्रा दी गई है।

लोकल रूट पर आई दिक्कत

फ्री बस सेवा के चलते लोकल रूट पर महिलाओं को परेशानी उठानी पड़ी। लोकल रूट पर अधिकतर प्राइवेट बसें आवागमन कर रही थी। प्राइवेट बस परिचालक बस में बैठाने से पहले ही महिलाओं की टिकट काटने में लगे थे। लोकल रूट पर रोडवेज बसों की संख्या कम रही। ऐसे में महिलाएं प्राइवेट बसों में बैठने को मजबूर हुई। बसों में सीट न मिलने पर कई महिलाओं को खड़े होकर यात्रा करनी पड़ी जबकि झुंपा, सिवानी, पाबड़ा, बहल, तोशाम, हांसी, नारनौंद, आदमपुर आदि ग्रामीण क्षेत्रों की बसों में भीड़ होने के कारण कई यात्री बस की सीढ़ी और दरवाजे पर यात्रा करते दिखे जबकि कुछ युवा बसों की छत पर सवार होकर आवाजाही के लिए मजबूर हो गए। उधर, रोडवेज जीएम राहुल मित्तल के अनुसार हिसार डिपो में 271 रोडवेज बसों का बेड़ा है। इनमें से गैर वातानुकूलित बसों को छोड़कर शेष करीब 250 रोडवेज बसों में महिलाओं और बच्चों ने मुफ्त यात्रा उपलब्ध कराई गई। अधिकतम बसों को दुरुस्त कर सभी मार्गों पर तय समय पर संचालित किया गया।

हिसार। विदेशी कंपनी भारत छोड़ो अभियान के तहत लगाई प्रदर्शनी को देखते लोग।

प्रदर्शनी लगाकर स्वदेशी अपनाने का किया आह्वान

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

- हस्ताक्षर कर सैकड़ों लोगों ने स्वदेशी अपनाने का संकल्प लिया

स्वदेशी जागरण मंच के तत्वावधान में स्वदेशी सुरक्षा एवं स्वावलंबन अभियान समिति द्वारा विदेशी कंपनी भारत छोड़ो अभियान शुरू किया गया। इस अभियान के तहत बरवाला के श्री रामदेव स्कूल व बाडोपट्टी के श्री बालाजी स्कूल में बच्चों, शिक्षकों व स्टाफ सदस्यों को विदेशी वस्तुएं त्यागने व स्वदेशी अपनाने का संकल्प करवाया गया।

जाट कॉलेज के प्राचार्य डॉ. कपेंद्र सिंह ने स्वदेशी उत्पादों के महत्व पर प्रकाश डाला। इस दौरान स्वदेशी मेला के प्रांतीय प्रमुख अनिल गोयल व बरवाला शाखा के अध्यक्ष धीरज कुमार एवं प्रधानाचार्य रविंद्र कुमार भी उपस्थित रहे। विदेशी कंपनी भारत छोड़ो अभियान को आगे बढ़ाते हुए मिल गेट एरिया में स्थित जिंदल पार्क व मुलतानी चौक पार्क में प्रदर्शनी लगाकर स्वदेशी व विदेशी उत्पादों की जानकारी प्रदान की गई। इसके साथ ही स्वदेशी व विदेशी वस्तुओं से संबंधित सूची का भी निशुल्क वितरण किया गया। स्वदेशी जागरण मंच द्वारा स्थापित पट पर हस्ताक्षर करके सैकड़ों लोगों ने स्वदेशी अपनाने का संकल्प लिया।

सेमिनार में चैरिटेबल ट्रस्ट से जुड़े मुद्दों को समझाया : बंसल

हिसार। चार्टर्ड अकाउंटेंट की संस्था एनआईआरसी हिसार ब्रांच द्वारा टैक्सेशन ऑफ चैरिटेबल ट्रस्ट पर आधारित सेमिनार का आयोजन किया गया। सेक्टर-16/17 के इंस्टीट्यूशनल एरिया में स्थित आईसीएआई भवन में आयोजित इस सेमिनार में अतिथि वक्ता सीए परिमल गांधी ने टैक्सेशन ऑफ चैरिटेबल ट्रस्ट के संदर्भ में जानकारी प्रदान की।

एनआईआरसी हिसार ब्रांच के चेयरमैन सीए अमन बंसल ने बताया कि सीए परिमल गांधी ने चैरिटेबल ट्रस्ट के विविध आयामों की चर्चा करते हुए टैक्स से संबंधित मुद्दों को स्पष्ट किया। उन्होंने श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब देकर उनकी जिज्ञासा को भी शांत किया। सीए अमन बंसल ने बताया कि एनआईआरसी हिसार ब्रांच द्वारा द इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (आईसीएआई) के तत्वावधान में निरंतर सेमिनार व अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसी कड़ी में टैक्सेशन ऑफ चैरिटेबल ट्रस्ट पर आधारित सेमिनार का आयोजन किया गया। उन्होंने बताया कि चैरिटेबल ट्रस्ट कई बार छोटे-छोटे मुद्दों को लेकर दुविधा में पड़ जाते हैं।

मालेगांव ब्लास्ट विषय पर गोष्ठी का आयोजन

सुनियोजित साजिश थी भगवा आतंकवाद

- इसका उद्देश्य समाज में वैमनस्य फैलाना रहा : प्रो. दयाल

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

पंचनंद शोध संस्थान अध्ययन केंद्र व लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से मालेगांव ब्लास्ट-षड्यंत्र की पराकाष्ठा विषय पर एक गोष्ठी आयोजित की गई।

गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक प्रो. मनोज दयाल ने प्रस्तोता व लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा ने अध्यक्षता की। प्रो. मनोज दयाल ने कहा कि भगवा आतंकवाद की संकल्पना एक सुनियोजित साजिश के तहत की गई थी। जिसका उद्देश्य समाज में वैमनस्य फैलाना एवं सांप्रदायिक सौहार्द का आघात पहुंचाना था। उन्होंने मालेगांव ब्लास्ट प्रकरण की पृष्ठभूमि, उससे संबंधित घटनाक्रम, न्यायिक प्रक्रिया पर प्रकाश डाला।

हिसार। गोष्ठी को संबोधित करते लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा।

गोष्ठियां उत्तम मंच

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय केवल शिक्षा प्रदान करने का केंद्र नहीं होते बल्कि सामाजिक जागरुकता और बौद्धिक विचार विमर्श के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने इस प्रकार की गोष्ठियों को विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए विचार-विमर्श का एक उत्तम मंच बताया।

तय कर सही स्कीम में निवेश करने से मिलेगा फायदा | म्यूचुअल फंड और गोल्ड निवेश करके बड़ा फंड तैयार करें | अपनी पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें, विविधता रखें

प्लानिंग बनाकर करें निवेश, 10 साल में बन सकते हैं करोड़पति

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

जब भी बात करोड़पति बनने की आती है तो ऐसा लगता है कि यह बहुत मुश्किल है। काफी लोग एक लाख रुपये महीने की सैलरी होने के बावजूद एक करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा नहीं कर पाते हैं। हालांकि यह प्लानिंग के साथ निवेश किया जाए तो यह कुछ मुमकिन है। आप सही प्लानिंग के जरिए निवेश करके मात्र 10 साल में ही करोड़पति बन सकते हैं। अगर आपकी उम्र 35 साल है और आप अगले 10-12 सालों में 1 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहते हैं, तो ये जानकारी आपके लिए काफी अहम हो सकती है।

जानकारों के अनुसार म्यूचुअल फंड और गोल्ड आदि जगह निवेश करके बड़ा फंड तैयारी किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड का रिटर्न शेयर मार्केट के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। जानकारों के मुताबिक पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें। पोर्टफोलियो में विविधता होनी चाहिए। एक्सपर्ट के अनुसार करोड़पति बनने के लिए जल्द से जल्द निवेश शुरू कर देना चाहिए। अगर कोई शख्स 35 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है तो वह 10 से 12 साल में करोड़पति बन सकता है। हालांकि इस दौरान निवेश में रिस्क लेना भी जरूरी होगा। इसके लिए कुछ रिश्क लें और लंबी अवधि के निवेश का प्लान तैयार कर आगे बढ़ें। इससे आप आसानी से करोड़पति बना पाएंगे और अपने धन से भविष्य को सुरक्षित कर पाएंगे। एक्सपर्ट कहते हैं कि कम जोखिम वाले निवेश से बहुत ज्यादा रिटर्न की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, लार्जकैप स्कीम्स ने पिछले पांच सालों में 14.02% का रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आप कम जोखिम लेंगे, तो आपको रिटर्न भी थोड़ा कम मिलेगा।

कहां करें निवेश

आप अपने पैसे को अलग-अलग जगहों पर निवेश कर सकते हैं। जैसे कि 20% ग्रोथ वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% वैल्यू वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% कॉन्ट्रा फंड में, 20% ग्रोथ वाले मिडकैप फंड में और 20% ग्रोथ वाले स्मॉल कैप फंड में निवेश कर सकते हैं। इस तरह से निवेश करने से आप अलग-अलग मार्केट कैप और स्टाइल में निवेश कर पाएंगे। इससे आपके पैसे के डूबने का खतरा कम होगा और आपको अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

करोड़पति बनने के लिए कितना निवेश करें

अगर आप 10 साल में 12% सीएजीआर (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) के साथ 1 करोड़ रुपये का फंड तैयार करना चाहते हैं, तो आपको हर महीने 45,000 रुपये एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करनी होगी। वहीं, 12 साल में करोड़पति बनना चाहते हैं तो यह निवेश 35,000 रुपये महीने का होगा। हालांकि 10 से 12 साल बाद एक करोड़ रुपये की वैल्यू कम हो जाएगी। इसलिए एक्सपर्ट कहते हैं कि हर साल एसआईपी की रकम 5 से 10 फीसदी बढ़ाते जाएं।

गोल्ड कितना जरूरी

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

ऐसे करें निवेश की प्लानिंग

चरण 1 : वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण

1. **लक्ष्यों की पहचान:** अपने वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित करें, जैसे कि रिटायरमेंट के लिए बचत, बच्चों की शिक्षा, या घर खरीदना।
2. **लक्ष्यों की प्राथमिकता:** अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता दें और उनकी समय सीमा निर्धारित करें।

चरण 2 : जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन

1. **जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन:** अपनी जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन करें और यह निर्धारित करें कि आप कितना जोखिम उठाने को तैयार हैं।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 3 : निवेश विकल्पों का चयन

1. **निवेश विकल्पों की जानकारी:** विभिन्न निवेश विकल्पों की जानकारी प्राप्त करें, जैसे कि स्टॉक, म्यूचुअल फंड, ईटीएफ, और बॉन्ड।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** वित्तीय लक्ष्यों व जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 4 : निवेश योजना का निर्माण

1. **निवेश योजना का निर्माण:** अपने वित्तीय लक्ष्यों और निवेश विकल्पों के अनुसार योजना बनाएं।
2. **निवेश की राशि:** निवेश की राशि निर्धारित करें और नियमित निवेश करने का निर्णय लें।

चरण 5 : निवेश की निगरानी और समीक्षा

1. **निवेश की निगरानी:** अपने निवेश की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार बदलाव करें।
2. **निवेश की समीक्षा:** यह सुनिश्चित करें कि लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं।

अतिरिक्त सुझाव

1. **विविधीकरण :** अपने निवेश को विविध बनाएं और एक ही निवेश विकल्प में अधिक जोखिम न उठाएं।
2. **नियमित निवेश :** नियमित निवेश करने से आपके निवेश की राशि बढ़ सकती है।

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड

चढ़ते और गिरते दोनों शेयरों पर दांव लगाने का मौका

काम की बात
बिजनेस डेस्क

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) गिरते बाजार में भी पैसे कमाने का मौका देता है। लेकिन, यह फंड कमजोर दिल वाले इनवेस्टर्स के लिए नहीं है। हाल में सेबी ने एसआईएफ की नई कैटेगरी शुरू की थी। क्वांट इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट फंड (क्यूएसआईएफ) इस कैटेगरी का इंडिया का पहला फंड है। यह इनवेस्टमेंट के लिए हेज-फंड स्टाइल की स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। इसका मतलब है कि यह एक ही समय में लॉन्ग पोजीशन और शॉर्ट पोजीशन या इसके ऑपोजिट पोजीशन लेने की इजाजत देता है। यह म्यूचुअल फंड के फ्रेमवर्क के तहत आता है। इसका मतलब है कि इस पर रेगुलेटर की नजर रहती है। यह इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा का भी ध्यान रखता है। उतारचढ़ाव वाले बाजार में शॉर्टिंग से मुनाफा कमाने की गुंजाइश होती है। क्वांट म्यूचुअल फंड के फाउंडर और सीआईओ संदीप टंडन ने कहा, रअगर आपके पास स्ट्रॉन्ग रिसर्च है, अच्छा एनालिटिक्स है और सॉलिड माइक्रो व्यू है तो शॉर्टिंग से आप मार्केट में दोनों तरह की स्थितियों में पैसे कमा सकते हैं। आपको स्टॉक के चढ़ने का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। गिरते स्टॉक्स से मुनाफा कमाना सेबी के फ्रेमवर्क के तहत लीगल है। यह उन इनवेस्टर्स के लिए अहम टूल है जो इसके इस्तेमाल का तरीका जानते हैं।

यह किस स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है

यह फंड लॉन्ग-शॉर्ट स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। यह ऐसे स्टॉक्स को खरीदता है, जिनकी कीमतें चढ़ने की उम्मीद होती है और साथ ही उन स्टॉक्स को शॉर्ट करता है जिनकी कीमतें गिरने के आसार होते हैं। इस स्ट्रेटेजी की वजह से मार्केट किसी भी दिशा में जाए इनवेस्टर्स को मुनाफा होता है। गिरने वाले और चढ़ने वाले शेयरों की पहचान फंड मैनेजर करता है। इसके लिए फंडामेंटल और टेक्निकल एनालिसिस का इस्तेमाल होता है।

टैक्स के कौन से नियम लागू होते हैं

टैक्स के मामले में एसआईएफ पर म्यूचुअल फंड्स के नियम लागू होते हैं। इस वजह से यह एआईएफ या पीएमएस के मुकाबले ज्यादा फायदेमंद हो जाता है। सहजमनी के फाउंडर और चीफ इनवेस्टमेंट एडवाइजर अभिषेक कुमार ने कहा, क्यूएसआईएफ जैसे इक्विटी ओरिएंटेड एसआईएफ के शॉर्ट टर्म गेंस पर 20 फीसदी टैक्स लगता है, जबकि लॉन्ग टर्म गेंस पर 12.5 फीसदी टैक्स लगता है। एक वित्त वर्ष में 1.25 लाख रुपये का गेंस टैक्स-फ्री है।

न्यूनतम इनवेस्टमेंट कितना है

एसआईएफ में कम से कम 10 लाख रुपये का निवेश जरूरी है। यह पीएमएस में न्यूनतम 50 लाख रुपये और एआईएफ में न्यूनतम 1 करोड़ रुपये के निवश के मुकाबले कम है। सैंक्टम वेल्थ में इनवेस्टमेंट प्रोडक्ट्स के हेड अलख यादव ने कहा कि न्यूनतम निवेश कम होने से यह ज्यादा इनवेस्टर्स के दायरे में आ जाता है। इसके अलावा चूंकि यह सेबी के नियम और कानून के तहत ऑपरेट होता है, जिससे इस पर रेगुलेटर की नजर बनी रहती है। इससे इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा होती है।

क्या आपको इनवेस्ट करना चाहिए?

एसआईएफ का इस्तेमाल इनवेस्टर को अपने सैटेलाइट पोर्टफोलियो की तरह करना चाहिए न कि कोर पोर्टफोलियो के एक हिस्से के रूप में। अगर कोई स्मार्ट इवेस्टर रिस्क और रिटर्न को बैलेंस करना चाहता है तो वह कुछ पैसा एसआईएफ में लगा सकता है। अगर वह 50 रुपये म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहता है तो वह इसमें से 15 रुपये एसआईएफ में लगा सकता है। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में कुल निवेश का 30 फीसदी वह एसआईएफ में इनवेस्ट कर सकता है।

क्या है एसआईएफ

स्पेशलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) एक नया निवेश विकल्प है जो म्यूचुअल फंड और पोर्टफोलियो मैनेजमेंट सर्विस (पीएमएस) के बीच का ऑप्शन है। यह निवेशकों को अधिक जोखिम लेने और विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग करने की अनुमति देता है, जैसे कि लॉन्ग-शॉर्ट फंड। एसआईएफ में निवेश करने के लिए कम से कम 10 लाख की आवश्यकता होती है।

एसआईएफ की विशेषताएं

- लॉन्ग-शॉर्ट फंड : एसआईएफ में निवेशक दोनों तरह के स्टॉक खरीद और बेच सकते हैं, जिससे जोखिम कम करने और बेहतर लाभ पाने का मौका मिलता है।
- अधिक जोखिम : एसआईएफ में निवेश करने वाले निवेशकों को अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है, लेकिन इससे अधिक रिटर्न भी मिल सकता है।
- टैक्स लाभ : एसआईएफ में टैक्स की व्यवस्था म्यूचुअल फंड जैसी ही है, जो निवेशकों के लिए फायदेमंद हो सकती है।

एसआईएफ में निवेश करने के लाभ

- अधिक फ्लेक्सिबिलिटी : एसआईएफ में निवेशक विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं और अपने निवेश को अधिक फ्लेक्सिबल बना सकते हैं।
- अधिक रिटर्न : एसआईएफ में निवेश करने से अधिक रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है।

कौन से फंड कर रहे हैं हाउस एसआईएफ लॉन्च

- क्वांट म्यूचुअल फंड : क्वांट म्यूचुअल फंड ने भारत का पहला लॉन्ग-शॉर्ट एसआईएफ फंड लॉन्च करने की मंजूरी प्राप्त की है।
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल : आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल भी अपना एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।
- एसबीआई म्यूचुअल फंड : एसबीआई म्यूचुअल फंड भी एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।

- फाइनेंशियल सफलता की पहली सीढ़ी है खर्चों पर रोक लगाना और भविष्य के लिए आय का 20 फीसदी बचाना
- अपने मंथली बिलों व खर्चों को कम कर बचा सकते हैं पैसे
- अपने बचे हुए पैसे को सही जगह निवेश करें, बढ़ेगा पैसा

पैसों का करें बेहतर मैनेजमेंट, नहीं होंगे परेशान

सैलरी को 'दीमक' की तरह खा जाते हैं बिल

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

अक्सर लोगों को लगता है कि फाइनेंशियल रूप से मजबूत या फिर सफलता का मतलब बहुत ज्यादा पैसा कमाना है, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं होता है। असल में फाइनेंशियल सफलता की पहली और सबसे अहम सीढ़ी है अपने खर्चों पर रोक लगाना। जब आप अपने मंथली बिलों और खर्चों को कम करते हैं, तो फिर आपके पास बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए अधिक पैसा बचता है। तभी आप अपने पैसे को बढ़ा पाते हैं। असल में यह कोई मुश्किल काम नहीं है, जी हां कुछ आसान और सुनियोजित कदम उठाकर आप अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं और एक मजबूत वित्तीय फ्यूचर की नींव रख सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ टिप्स जो अपको आर्थिक सफलता की ओर ले जाएंगे।

पहला कदम : अपने खर्चों को पहचानें

सबसे पहले, आपको यह जानना होगा कि आपकी मेहनत की कमाई का पैसा कहां जा रहा है। इसके लिए, आप कम से कम एक महीने तक अपने हर छोटे-बड़े खर्च का हिसाब रखें। अपने सभी खर्चों को एक कॉपी में या मोबाइल ऐप में लिखें। इसमें किराए, किराने का सामान, ईएमआई, बिजली बिल से लेकर एक कप चाय का खर्च भी शामिल करें। यह कदम आपको यह समझने में हेल्प कर सकता है कि आप कहां-कहां फिजूलखर्ची कर रहे हैं।

दूसरा कदम बजट बनाएं

एक बात साफ है कि जब आप अपने खर्चों को पहचान लेंगे, तो अगला कदम होगा एक मासिक बजट बनाना है। अपनी इनकम के हिसाब से हर चीज के लिए एक लिमिट तय करें. बजट बनाने से आपको अपने खर्चों को कंट्रोल करने में मदद मिल सकेगी। अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें।

अहम खर्चे : किराया, ईएमआई, राशन, दवाई आदि।

गैर-जरूरी खर्चे : बाहर खाना, ऑनलाइन शॉपिंग, मनोरंजन आदि।

तीसरा कदम : गैर-जरूरी खर्चों में कटौती

अधिक पैसा बचाने के लिए अपने गैर-जरूरी खर्चों में कटौती करें। इससे आपको हर महीने पैसे बचने लगेंगे। इस पैसे को आप अच्छी जगह पर निवेश करें। धीरे धीरे इस निवेश औश्र अचत को बढ़ाते जाएंग। इससे आपके हाथों में अधिक पैसा आएगा और आपकी बचत बढ़ती जाएगी। आप इन खर्चों में कर सकते हैं कटौती।

मनोरंजन : कई ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के सब्सक्रिप्शन लेने के बजाय, केवल एक या दो का ही यूज करें।

खान-पान : बाहर से खाना ऑर्डर करने की जगह, घर पर खाना बनाने की आदत डालें। इससे आपके पैसे और हेल्थ दोनों बचेंगे।

शॉपिंग : अनावश्यक और आवेगपूर्ण खरीदारी से बचें। जब कोई चीज जरूरी हो तभी खरीदें।

चौथा कदम : बड़े बिलों को कम करें

आपको अपनी बचत बढ़ाने के लिए अपने सबसे बड़े मासिक बिलों को कम करने के तरीके खोजने होंगे या कमाई को बढ़ाना होगा। कोई भी पार्टटाइम काम करें। फीलॉन्सिंग भी कर सकते हैं। इससे आपको पैसे बचेंगे। बिजली का बिल ज्यादा है। गैर जरूरी उपकरणों को बंद कर दें। घर लाइट उतनी ही जलाएं, जितनी जरूरत हो। कुछ बिलों में ऐसे कर सकते हैं कटौती।

बिजली बिल : घर में एलईडी लाइट का यूज करें, पुराने और ज्यादा बिजली खाने वाले उपकरणों को बदलें और जरूरत न होने पर पंखे, एसी और लाइट बंद करें।

फोन और इंटरनेट : अपने फोन और इंटरनेट प्लान की तुलना करें। कई बार, कंपनियां बेहतर ऑफर दे रही होती हैं, जिनसे आपका बिल कम हो सकता है।

लोन की ईएमआई : अगर आपके पास पुराना लोन है, तो उसकी ब्याज दर को कम करने के लिए बैंकों से बात करें।

पांचवां कदम : बचत को प्राथमिकता दें

अपने मंथली खर्चों को कम करने के बाद, जो भी पैसा बचे उसे तुरंत बचत और इन्वेस्टमेंट में लगाएं। 'खुद को पहले भुगतान करें' के रूल को अपनाएं। इसका मतलब है कि सैलरी आने पर सबसे पहले बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए पैसा निकालें, फिर बाकी बचे पैसों से खर्च करें। इससे साफ है कि मंथली बिलों को कम करना एक आदत है, जिसे लगातार कोशिश से अपनाया जा सकता है। यह कोई बड़ा काम नहीं होता है, बल्कि छोटे-छोटे कदमों का एक बड़ा रूप होता है। इन कुछ कदमों को उठाकर आप ना केवल अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्यों को भी हासिल कर सकते हैं और एक सेफ फ्यूचर की नींव रख सकते हैं।

स्टूडेंट लाइफ में फाइनेंशियल मैनेजमेंट घटा सकता है परेशानी, बजट बनाकर फ्यूचर प्लानिंग भी छात्रों के लिए बेहतर

इन्हें अपनाने से कम पैसों में भी जी सकते हैं बॉस वाली जिंदगी

स्टूडेंट लाइफ में करें मनी मैनेजमेंट,भविष्य में धन की नहीं रहेगी कमी, अमीर बनने के लिए हर छात्र कुछ अहम टिप्स को अपनाएं

प्लानिंग
बिजनेस डेस्क

स्टूडेंट लाइफ में सेविंग्स की आदत डालना फ्यूचर के लिए सबसे मजबूत नींव हो सकती है। सेविंग्स को कमी भी जो बचेगा, वही बचाऊंगा की सोच से ना देखें, बल्कि इसे अपनी प्रायोरिटी बनाएं। छोटे-बड़े बचत लक्ष्य तय करें। जब कोई टारगेट तय होता है तो बचत करना आसान और प्रेरणादायक लगता है। हमेशा ट्राई करें कि आपकी आय का 10% या 20% हिस्सा सीधे बचत खाते में डालें।

विद्यार्थी लाइफ अक्सर उत्साह, सीखने और नए अनुभवों से भरा होती है, लेकिन इसी दौरान पैसों का मैनेजमेंट बहुत बड़ी चुनौती भी साबित हो सकता है। कॉलेज की फीस, किताबों का खर्च, हॉस्टल का किराया, खाना-पीना, और मनोरंजन के खर्चे इन सभी को मैनेज करना कभी बार मुश्किल हो जाता है, लेकिन अगर स्टूडेंट टाइम में ही बजट बनाना और पैसों का सही मैनेजमेंट सीख लिया जाए तो फ्यूचर आर्थिक परेशानियों से बच सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि छात्रों को शुरू से ही मनी मैनेजमेंट पर ध्यान देना चाहिए ताकि भविष्य की दिक्कतों से दूर रहा जा सके और छात्र आसानी से धनवान बन सकें। अच्छी फाइनेंशियल आदतें न केवल आपको कर्ज के जाल में फंसने से बचाती हैं, बल्कि आपको अपने टारगेट को प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपको धनवान बना सकते हैं।

अपनी इनकम को ट्रैक करें

हर छात्र को अपने फाइनेंशियल लाइफ की शुरुआत सबसे पहले अपनी इनकम और खर्चों को ट्रैक करना चाहिए। चाहे पॉकेट मनी हो, स्कॉलरशिप या पार्ट-टाइम जॉब की आमदनी हो, सबका हिसाब रखना जरूरी होता है। इसके लिए आप एक छोटी डायरी, कोई बजटिंग ऐप या एक्सेल शीट का सहारा ले सकते हैं। स्टूडेंट रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्च जैसे स्नैक्स, ऑटो किराया या ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन को भी मेंशन करें। यह आदत आपको अपनी फिजूलखर्ची समझने और उसे नियंत्रित करने में मदद करेगी, जिससे पैसों की बचत हो सकेगी।

आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझें

अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें-स्टूडेंट लाइफ में आर्थिक समझ को समझना बेहद जरूरी है, और इसकी शुरुआत होती है 'आवश्यकताओं' और 'इच्छाओं' के फर्क को समझने से। आवश्यकताएं वो खर्चे होते हैं जो लाइफ के लिए जरूरी हैं-जैसे ट्यूशन फीस, किताबें, रूम रेंट, खाना और आना-जाना, जबकि, इच्छाएं वो चीजें हैं जो केवल सुख-सुविधा के लिए होती हैं, जैसे बाहर खाना, फिल्म देखना या नया गैजेट खरीदना, तो जब आप इन दोनों के बीच फर्क पहचान लेंगे, तो आप अपनी जरूरत पर फोकस करके जरूरी खर्चों पर लगाम लगाकर बेहतर फाइनेंशियल कंट्रोल बना सकते हैं।

50/30/20 का बजट बनाएं

अपनी इनकम और खर्चों को समझने के बाद अगला जरूरी कदम है एक सही मंथली बजट बनाया जाए। आप अपनी मासिक आय के अनुसार भोजन, कन्वेंशन, पढ़ाई की चीजें और मनोरंजन जैसी लिस्ट के लिए अलग-अलग पैसे तय करें। यह ध्यान रखें कि आपके कुल खर्च आपकी कुल आमदनी से अधिक ना हों। बजट बनाने के लिए आप 50/30/20 रूल का पालन कर सकते हैं, जैसे 50% राशि आवश्यकताओं पर, 30% इच्छाओं पर और 20% सेविंग्स या किसी भी लोन की चुकौती के लिए रखें।

स्मार्ट खरीदारी करें और रियायतों का लाभ उठाएं

पैसों की बचत के लिए रियायतों और डील्स का समझदारी से यूज करना बेहद फायदेमंद हो सकता है। जहां तक हो हमेशा अपने स्टूडेंट आईडी कार्ड को साथ रखें और **wherever possible** उसे दिखाकर छूट पाने की कोशिश कर सकते हैं। आप किराने का सामान थोक में खरीदें और ऑफर्स या सेल पर नजर रखना चाहिए, इतना ही नहीं महंगे ब्रांड्स की बजाय सामान्य ब्रांड चुनना अधिक बजट-फ्रेंडली होता है।

एक्स्ट्रा इनकम के ऑप्शन खोजें

अगर आपका बजट लिमिटेड है तो खर्चों पर नियंत्रण के साथ-साथ इनकम बढ़ाने के ऑप्शन ढूंढें। आप पार्ट-टाइम जॉब जैसे ट्यूटरिंग, कैंपस असिस्टेंटशिप या फ्रीलांसिंग का ऑप्शन चुन सकते हैं। साथ ही आपकी हॉबी भी कमाई का जरिया बन सकती है—जैसे ऑनलाइन कंटेंट बनाना, हैंडमेड क्राफ्ट्स बेचना या ब्लॉगिंग करना।

इमरजेंसी फंड बनाएं

अचानक आने वाले खर्चों के लिए हमेशा तैयार रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि मेडिकल इमरजेंसी, लैपटॉप खराब होना या कोई भी अचानक से कोई भी खर्चे सामने आ सकते हैं। इसके लिए आप एक अलग बचत खाता खोलकर उसमें धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी राशि जमा करें। ऐसा करने से आपको महंगे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। छात्र बजट बनाना, खर्चों की प्राथमिकता तय करना और हर महीने की सेविंग्स तय करना सीखकर फाइनेंशियल मैनेजमेंट की शुरुआत कर सकते हैं।

रक्षाबंधन को लेकर पुलिस अलर्ट, चौक-चौराहों पर तैनात रहे जवान, नाकाबंदी भी की गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

रक्षाबंधन के पर्व को देखते हुए शनिवार को पुलिस प्रशासन अलर्ट मोड़ पर रही। रक्षाबंधन का पावन पर्व जिले में शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हो, इसके लिए पुलिस प्रशासन द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन के निर्देशानुसार जिले के शहरों में प्रमुख बाजारों, भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर विशेष सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। बस स्टैण्ड पर लोगों की भीड़ को देखते हुए पुलिस द्वारा स्पेशल टीमों को वहां तैनात किया गया था।गांवों और शहरों के प्रमुख बाजारों, भीड़भाड़ वाले स्थानों, धार्मिक स्थलों और बस स्टैंडों पर पुलिस की अतिरिक्त तैनाती की गई है, ताकि आमजन को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े और वे पर्व को सुरक्षित वातावरण में मना सकें। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन के निर्देशानुसार सभी थाना प्रभारियों, चौकी प्रभारियों व पुलिस अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के आदेश दिए गए हैं कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में नियमित पैदल गश्त करें, संदिग्ध गतिविधियों पर सतर्क नजर रखें तथा आमजन से संवाद कर उन्हें सुरक्षा का भरोसा दिलाएं। शनिवार को रक्षाबंधन को लेकर बाजारों में भीड़ उमड़ी रही। इस कारण बड़े वाहनों के आने से बार-बार जाम लग रहा था। इसका संज्ञान लेते हुए एसपी सिद्धांत जैन ने ट्रैफिक पुलिस को निर्देश दिए, जिसके बाद शनिवार सुबह से ही बैरिकेड्स लगवा कर पुलिसकर्मी जवाहर चौक पर तैनात कर दिए गए थे। पुलिस कर्मी बड़े वाहनों को रोककर दूसरी तरफ भेज रहे थे। जिले के शहर फतेहाबाद, रतिया व टोहाना के बाजारों में त्यौहार के दिन उमडऩे वाली भीड़ को देखते हुए शहरों में बेरिकेडिंग की गई है।

फतेहाबाद। रक्षाबंधन के दिन जिलेभर में तैनात पुलिस की टीमें। फोटो :हरिभूमि

थाना रोड शहर का मुख्य बाजार

बता दें कि थाना रोड फतेहाबाद का प्रमुख बाजार है। चार मरला कालोनी मार्किट, धर्मशाला रोड, जवाहर चौक, फव्वारा चौक, ठाकर बस्ती आदि जाने के लिए लोग थाना रोड से ही गुजरते हैं जिस कारण त्यौहार के दिनों में यहां जाम की स्थिति बनी रहती है। शनिवार को सुबह से ही काफी संख्या में लोग खरीदारी करने के लिए फतेहाबाद के बाजारों में पहुंच रहे थे। इस कारण पुलिस ने बेरिकेड्स लगाकर बड़े वाहनों को रोकने की व्यवस्था की है। एसपी से निर्देश मिलने के बाद अब पुलिसकर्मियों को दिनभर बाजार में व्यवस्था पर सक्रियता से निगरानी रखने के लिए कहा गया। पुलिसकर्मी जवाहर चौक से लेकर फव्वारा चौक तक लगातार गश्त करते रहे ताकि बाजार में जाम की स्थिति न बने।

पुलिस कर्मचारियों को भी तैनात किया

रक्षाबंधन के दौरान महिलाओं और बच्चों की अधिक मौजूदगी को देखते हुए महिला पुलिस कर्मियों की विशेष तैनाती की गई है। साथ ही, ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के लिए यातायात पुलिस को अतिरिक्त सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं। पुलिस की प्राथमिकताएं प्रमुख बाजारों, धार्मिक स्थलों, बस स्टैंड्स व रेलवे स्टेशन पर अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती, महिला पुलिस कर्मियों द्वारा बाजारों में पैदल गश्त और जागरूकता अभियान है। ट्रैफिक व्यवस्था को व्यवस्थित रखने हेतु विशेष ड्यूटी लगाई गई थी।

सिद्धांत जैन, एसपी फतेहाबाद

जिलाभर में श्रद्धा एवं उल्लास से मनाया गया रक्षाबंधन पर्व

बहनों ने भाइयों की कलाई पर बांधी राखी बाजारों में देर शाम तक रही चहल-पहल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

भाई-बहन के अटूट प्रेम और श्रद्धा का पर्व रक्षाबंधन शनिवार को जिले में धूमधाम से मनाया गया। जिलाभर के मंदिरों, गौशालाओं, अनाथालयों, ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय व सतगुरू कृपा अपना घर में महिलाओं ने जाकर प्रेम श्रद्धास्वरूप राखी बांधी। इस बार रक्षाबंधन पर भ्रदा काल का साया न होने के कारण पूरा दिन बहनों ने अपने भाइयों का टीका किया और उन्हें राखी बांधते हुए उनके स्वस्थ और खुशहाल जीवन की कामना की। इसके साथ ही भाइयों ने भी बहनों की सुरक्षा का संकल्प लिया। जिले के शहरी और ग्रामीण इलाकों में रक्षाबंधन का पर्व पूरे उल्लास के साथ मनाया गया। महिलाएं अपने भाइयों के पास राखी बांधने के लिए दूर-दराज से आई। शनिवार को तीन साल बाद भद्रा का साया न होने से पूरा दिन ही स्वार्थसिद्धि योग के समय बहनों ने भाई को राखी बांधी। दरअसल तीन साल बाद यह संयोग बना है। इससे पूर्व बहनें मंदिरों के पुजारियों व ज्योतिषों से राखी बांधने का समय, शुभ संयोग का इंतजार करती थी। रक्षाबंधन को लेकर शनिवार से ही बाजारों में खासी भीड़ देखी गई। शनिवार देर रात तक बाजारों में चहल-पहल रही। मिठाईयों की दुकानों के अलावा, राखी की स्टालों, किरयाणे की दुकानों व धार्मिक साज-सज्जा का सामान बेचने वालों पर देर रात तक लोगों की भीड़ उमड़ी रही। शनिवार को अलसुबह ही बाजारों में शामियाने लग गए। दुकानदारों ने दुकानों के बाहर मिठाई व राखियों की स्टालें लगाई, जहां पर बाहर से आ रहे लोगों ने जमकर खरीददारी की। इस बार मिठाई के अलावा ड्राई फ्रूट, नारियल, चॉकलेट के गिफ्ट पैक्स की काफी बिक्री हुई।

सांसद बराला को ब्रह्माकुमारी बहनों ने बांधी राखी

टोहाना। रक्षाबंधन के पावन अवसर पर ब्रह्माकुमारी बहन कौशल्या और अन्य बहनों ने राज्यसभा सांसद सुभाष बराला को राखी बांधकर बधाई दी और उनके स्वस्थ, सुखमय व दीर्घायु जीवन की कामना की। सांसद सुभाष बराला ने कहा कि रक्षाबंधन केवल एक पारंपरिक पर्व ही नहीं, बल्कि भाई-बहन के पवित्र रिश्ते, स्नेह, विश्वास और सुरक्षा के अटूट बंधन का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि आज के समय में इस पर्व का अर्थ सिर्फ रिश्तों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि समाज में एक-दूसरे की सुरक्षा, सम्मान और सहयोग की भावना को भी मजबूत करना चाहिए। उन्होंने ब्रह्माकुमारी संगठन की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्था समाज में आध्यात्मिक जागृति, नैतिक मूल्यों और सकारात्मक सोच के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इनके सेवा कार्य न केवल व्यक्ति के जीवन को बदलते हैं बल्कि समाज को भी सही दिशा देने में सहायक होते हैं।

भाजपा जिलाध्यक्ष ने ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में बंधवाई राखी

भाजपा जिलाध्यक्ष एडवोकेट प्रवीण जोड़ा ने रक्षाबंधन का पर्व समाज के प्रति समर्पित होते हुए मनाया। सर्व प्रथम प्रवीण जोड़ा ने अशोक नगर स्थित ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ब्रह्मकुमारी मोहिनी बहन का रक्षाबंधन पर पवित्र संदेश श्रवण किया एवं उनसे राखी बंधवा कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर आश्रम में बने ओम शांति म्यूजियम को देखा एवं वहां भैया जी ने प्रदर्शन के माध्यम से जीवन के रहस्यों के विषय में अवगत करवाया। इसके अलावा बीजेपी जिला कार्यालय में डीएनटी समाज की बेटियों की बेटियों से जिलाध्यक्ष एडवोकेट प्रवीण जोड़ा ने राखी बंधवाकर उन्हें आशीर्वाद दिया तथा उपहार भेंट किये। इस अवसर पर भाजपा के जिला महामंत्री अशोक जाखड़ व विकास ललौदा, जिला उपाध्यक्ष भीम लाम्बा, कार्यालय सचिव शम्मी ढींगड़ा, पार्षद जगदीश नायक, सुल्तान नायक, बनवारी लाल व अन्य मौजूद रहे।

रतिया। बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधती हुई।

रतिया में धूमधाम से मनाया गया रक्षाबंधन का त्योहार

रतिया। रक्षा बंधन के पर्व को लेकर आज शहर में खूब चहल-पहल रही और दुकानदारों द्वारा पर्व को देखते हुए अपनी दुकानों को विशेष तौर से सजाया गया। अनेक दुकानों से आज बहनों ने अपने भाई की कलाई पर राखी बांधने के लिए सुंदर-सुंदर राखियों की खरीददारी की। शहर में आज सुबह से ही बहनों ने अपनी भाईयों की कलाइयों पर राखी बांधी व उनकी आयु लंबी होने की दुआ की।

आज शहर में राखी व मिठाईयों की दुकानों की पूरी सजावट की गई थी, जहां पर भारी भीड़ देखने को मिल रही थी। रक्षाबंधन के अवसर पर बड़ों के साथ-साथ छोटे-छोटे बच्चों में भी काफी उत्साह देखा गया तथा अनेक छोटे-छोटे बच्चे अपनी कलाइयों पर विभिन्न डिजाइनों की रंग-बिरंगी राखियां बांधे हुए थे। अनिता, कविता, मोनिका, वर्षा, ममता, बबिता आदि महिलाओं ने बताया कि वे हर साल नए-नए डिजाइनों की राखियां खरीदना पसंद करती हैं। उन्होंने बताया कि पूर्व में तो रक्षा बंधन पर भाई की कलाई पर मात्र मौली आदि का धागा बांध दिया जाता था,लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब तो नए-नए डिजाइनों में एक से बढक़र एक राखी आ गई है। उनका कहना है सुंदर राखी ही कलाई पर बंधी हुई अच्छी लगती है। रक्षा बंधन के चलते आज बसों में भी महिलाओं की काफी भीड़ देखने को मिली।

अपेक्स कॉन्वेंट स्कूल में सांस्कृतिक उल्लास के साथ रक्षाबंधन पर्व का आयोजन

फतेहाबाद। सतीश कालोनी स्थित अपेक्स कॉन्वेंट स्कूल में रक्षाबंधन पर्व हर्षोल्लास और रचनात्मक गतिविधियों के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में राखी मेकिंग, लुंबी मेकिंग, टैटू मेकिंग तथा पोस्टर मेकिंग जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें विद्यार्थियों ने अपनी कल्पनाशक्ति और कला का सुंदर प्रदर्शन किया। विद्यालय के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने कौशल से सभी को प्रभावित किया। कार्यक्रम का माहौल रंगीन और उल्लासपूर्ण रहा। समापन सत्र में प्रधानाचार्य उमंग कक्कड़ ने विद्यार्थियों को रक्षाबंधन के पावन पर्व के महत्व से अवगत कराते हुए भाई-बहन के रिश्ते में निहित स्नेह, सम्मान और सहयोग का संदेश दिया। प्रबंधन के निदेशक अमित मक्कड़ ने बच्चों को सांस्कृतिक परंपराओं को संजोते हुए अपनी प्रतिभा को निरंतर निखारने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय प्रबंधन ने इस आयोजन की सफलता का श्रेय सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों को दिया।

महिलाओं ने उठाया मुफ्त बस यात्रा का लाभ

सिरसा। जिलाभर में भाई-बहन के प्यार का प्रतीक रक्षाबंधन का त्यौहार श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया। पर्व को लेकर बाजारों में काफी चहल-पहल रही। बहनों ने भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधी और उनके उज्जवल और सुरक्षित जीवन की कामना की। शनिवार सुबह सवेरे ही बहनें सजधज कर तैयार हुई और और शुभ मुहूर्त में भाइयों की तिलक लगाकर व आरती उतारकर कलाई पर राखी बांधी। भाइयों ने बहनों को रक्षा का वचन देते हुए उन्हें उपहार भेंट किए। महिलाएं राखी बांधने दूर-दराज से अपने भाइयों के पास पहुंची। रक्षाबंधन पर सरकार द्वारा रोडवेज की बसों में दी गई निशुल्क यात्रा का महिलाओं ने भरपूर लाभ उठाया। बसों में महिलाओं की खासी भीड़ रही। सुरक्षा की दृष्टिगत पुलिस प्रशासन की ओर से भी पुख्ता शहर में पुख्ता इंतजाम किए गए थे। सुबह से ही शहर के प्रमुख बाजारों में गश्त करती रही। सरकार की ओर से रक्षाबंधन पर्व पर 36 घंटे के लिए महिलाओं को दी गई मुफ्त यात्रा करने की छूट के चलते शुक्रवार दोपहर के बाद से ही बस स्टैंड पर महिलाओं की भारी भीड़ दिखी। शनिवार को जिलाभर में चल रही रोडवेज की बसों के माध्यम से महिलाओं ने यात्रा की। बसों में आज पुरुषों के मुकाबले महिलाएं ही ज्यादा नजर आई।

जेल में बंदियों से बहनों ने की मुलाकात, बंधवाई राखी

सिरसा। जिला जेल में भी रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। विशेष रूप से रक्षाबंधन के मौके पर बंदियों व कैदियों की उनकी बहनों के साथ खुली मुलाकात का प्रबंध किया गया था। इतना ही नहीं जेल प्रशासन द्वारा सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से बहनों के लिए राखी के साथ-साथ जलपान की व्यवस्था भी गई थी। बहनों ने जेल प्रशासन की इस पहल की खूब प्रशंसा की। दूर-दराज से आई बहनों ने न केवल अपने भाइयों से मुलाकात की बल्कि पारिवारिक माहौल में राखी बांधी। जेल प्रशासन द्वारा रक्षाबंधन पर्व को देखते हुए खास व्यवस्था करवाई गई थीं। बहनें भाइयो की कलाई पर राखी बांधकर खुश नजर आई तो कई बहनें भावुक भी हो गई। जेल प्रशासन की ओर से टैंट की व्यवस्था करवाई गई। साथ-साथ आगंतुक बहनों के लिए सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से जलपान का प्रबंध किया गया था। इस मौके पर रोटरी क्लब के पदाधिकारी भूपेश मेहता ने कहा कि इस सराहनीय पहल ने यह सिद्ध किया कि त्योहारों की असली आत्मा तब जीवंत होती है, जब हम उन्हें वंचित, उपेक्षित और जरूरतमंद लोगों के साथ बांटते हैं। रोटरी क्लब का यह आयोजन न केवल एक सामाजिक जिम्मेदारी का परिचायक है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि सेवा, करुणा और भाईचारा आज भी समाज को जोडऩे वाली सबसे मजबूत कडिय़ां हैं। कार्यक्रम में रोटरी क्लब के प्रधान डॉ. विद्यासागर बांसल, लखविंदर सिंह, कैशियर राजेश खट्टर, पूर्व प्रधान देवेंद्र मिगलानी, मनीष मेहता, विष्णु सिंगला व अन्य मौजूद रहे।

मॉडल टाउन में हुई चोरी का पुलिस ने किया पर्दाफाश, दो युवक गिरफ्तार, केस दर्ज

फतेहाबाद। मॉडल टाऊन क्षेत्र में एक स्कूल संचालक के मकान में हुई चोरी के मामले का सीआईए फतेहाबाद पुलिस ने पर्दाफाश किया है। इस मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान राजेश कुमार उर्फ कालिया पुत्र मोड सिंह निवासी रतिया चुंगी, फतेहाबाद तथा बलदेव उर्फ भोलू पुत्र कश्मीर सिंह, निवासी गुरुनानकपुरा मोहल्ला, फतेहाबाद के रूप में हुई है। सीआईए प्रभारी निरीक्षक कुलबीर सिंह ने बताया कि इस बारे पुलिस ने ऑलिव स्कूल फतेहाबाद के मालिक तुलसीराम मेहता की शिकायत पर 4 अगस्त को केस दर्ज किया था। शिकायतकर्ता के अनुसार, अज्ञात व्यक्तियों ने उनके घर से नकदी व कीमती सामान चोरी कर लिया था। पुलिस टीम ने तकनीकी साक्ष्य, सीसीटीवी फुटेज और गुप्त सूचना के आधार पर त्वरित कार्रवाई करते हुए दो संदिग्धों की पहचान की और उन्हें काबू करने में सफलता प्राप्त की। पूछताछ के दौरान खुलासा हुआ कि बलदेव उर्फ भोलू एक आदतन अपराधी है जिसके खिलाफ पहले से ही एनडीपीएस एक्ट व चोरी से संबंधित 9 आपराधिक मामले दर्ज हैं। प्रारंभिक पूछताछ में दोनों आरोपियों ने चोरी की वारदात को स्वीकार किया है। उन्हें सीआईए टीम द्वारा डिटेन कर नियमानुसार थाना शहर फतेहाबाद के अंतर्गत पुलिस चौकी बस अड्डा की जांच अधिकारी महिला सहायक उपनिरीक्षक मंजू रानी के हवाले किया गया।

धान फर्जीवाड़ा : लाखों रुपये का कैश बरामद

हरिभूमि न्यूज. फतेहाबाद

जिले में मेरी फसल मेरा ब्योरा पोर्टल पर फर्जी रजिस्ट्रेशन करवाकर धोखाधड़ी करने के मामले में आर्थिक अपराध शाखा, फतेहाबाद पुलिस ने लाखों की नकदी बरामद की है। पुलिस ने इस मामले में गिरफ्तार आरोपियों वलिहार सिंह पुत्र सुखदेव सिंह निवासी रतिया एवं केवल सिंह पुत्र सोहन सिंह निवासी नन्हेड़ी से पुलिस रिमांड के दौरान पूछताछ करते हुए यह नकदी बरामद की है।

ये था मामला

बता दें कि जिले में किसानों के नाम पर फर्जी रजिस्ट्रेशन कराकर मेरी फसल मेरा ब्योरा पोर्टल

■ पुलिस ने रिमांड में बरामद की राशि

के माध्यम से सरकारी योजनाओं का अनुचित लाभ उठाने की शिकायतें सामने आई थी। इन शिकायतों में फर्जी तरीके से धान की एंट्री कर बड़े स्तर पर सरकारी भुगतान प्राप्त करने की बात सामने आई थी। इस पर थाना शहर रतिया में 8 सितम्बर 2022 मामला दर्ज किया गया था। गहन जांच के उपरांत आर्थिक अपराध शाखा फतेहाबाद ने तीन आरोपियों वलिहार सिंह, भूपेन्द्र सिंह एवं केवल सिंह को 7 अगस्त को गिरफ्तार किया। आरोपी भूपेन्द्र सिंह को न्यायालय द्वारा न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया, जबकि वलिहार सिंह और केवल सिंह को 3 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया। पुलिस पूछताछ के दौरान दोनों आरोपियों ने फर्जीवाड़े की योजना, भूमिका और लाभार्थियों की जानकारी दी। उनकी निशानदेही पर पुलिस ने आरोपी वलिहार सिंह से 2 लाख रुपये व आरोपी केवल सिंह से 5 लाख रुपये बरामद किए हैं। बरामद राशि को पुलिस ने साक्ष्य के तौर पर कब्जे में लेकर आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है। प्रकरण में शामिल अन्य व्यक्तियों की भूमिका की भी जांच की जा रही है। पुलिस द्वारा बैंक खातों, डिजिटल ट्रांजेक्शन्स, मोबाइल डिवाइसेज और दस्तावेजों की गहनता से जांच की जा रही है। जल्द ही अधिक गिरफ्तारी की संभावना है।

नशीली दवाओं के दुरुपयोग की रोकथाम के लिए हेल्पलाइन नंबर 1933 पर करें शिकायत

फतेहाबाद। नशीली दवाओं के दुरुपयोग और तस्करी की रोकथाम के लिए केंद्र सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। नशा मुक्त भारत अभियान के तहत गृह मंत्रालय ने नेशनल नारकोटिक्स हेल्पलाइन मानस 1933 की शुरुआत की है। यह हेल्पलाइन नंबर 24 घंटे सक्रिय हैं। उपायुक्त मनदीप कौर ने नागरिकों से आह्वान किया है कि यदि किसी भी नागरिक को कहीं भी नशे का अवैध व्यापार होता दिखाई दे, तो वे भारत सरकार के टोल-फ्री नंबर 1933, ऑनलाइन पोर्टल पर तुरंत सूचना दें। डीसी ने कहा कि नागरिक इस मंच के माध्यम से नशीली दवाओं की रिपोर्ट तुरंत सांझा कर सकते हैं। नागरिक नशामुक्त भारत के राष्ट्रीय दृष्टिकोण में योगदान देने के लिए नशीली दवाओं की तस्करी की हेल्पलाइन के माध्यम से रिपोर्ट दें। नागरिक हेल्पलाइन से नशीली दवाओं के बारे में परामर्श भी ले सकते हैं। उपायुक्त मनदीप कौर ने बताया कि इस हेल्पलाइन की सबसे खास बात यह है कि सूचना देने वाले व्यक्ति की पहचान पूरी तरह से गोपनीय रखी जाएगी। लोग बिना डर या नि-संकोच नशीली दवाओं की तस्करी / व्यापार की जानकारी सांझा कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि यह पहल न केवल समाज में फैले नशे की प्रवृत्ति को रोकेगी बल्कि युवाओं को भी इस बुराई से बचाने में मदद मिलेगी। केंद्र सरकार का लक्ष्य वर्ष 2047 तक भारत को पूरी तरह से नशा मुक्त बनाना है और इस दिशा में जन-सहयोग को बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

चेयरमैन ने 25 लाख से निर्मित पंचायत समिति रेस्ट हाउस का किया उद्घाटन

हरिभूमि न्यूज. रतिया

खंड विकास एवं पंचायत कार्यालय में करीबन 25 लाख रुपए की लागत से बने हुए पंचायत समिति रेस्ट हाउस का चेयरमैन केवल मेहता ने उद्घाटन किया। पत्रकारों से बातचीत करते हुए अध्यक्ष केवल मेहता ने बताया कि पंचायत समिति के सदस्यों व सरपंच द्वारा पिछले काफी समय से खंड कार्यालय में एक रेस्ट हाउस की मांग की जा रही थी जिसको देखते हुए प्रस्ताव पास किया गया था और 25 लाख रुपए की लागत से रेस्ट हाउस का निर्माण किया गया है। इसमें दो कमरों के अलावा एक मीटिंग हॉल किचन बाथरूम व बालकोनी इत्यादि बनाए गए हैं। इस रेस्ट हाउस के बनने से विभिन्न गांव के आने वाले सरपंचों व पंचायत समिति सदस्यों को लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि पंचायत समिति रतिया द्वारा बिना किसी भेदभाव के गांवो में करोड़ों रुपए के विकास कार्य करवाए जा रहे हैं और जल्द ही सभी गांवो में विकास कार्यों के लिए अनुदान भी दिया जाएगा। इस अवसर पर पंचायती राज विभाग के उपमंडल अधिकारी कुलदीप सिंह, कनिष्ठ अभियंता मनोज कुमार, सुशील कुमार, प्रदीप कुमार, कपिल कुमार, संदीप सोहल व विभिन्न गांव के सरपंच सुखजिंदर सिंह व अन्य मौजूद रहे।

रतिया। पंचायत समिति रेस्ट हाउस का उद्घाटन करते हुए चेयरमैन केवल मेहता।

रिटायर्ड कर्मचारी संघ ने बैठक कर जताया रोष

कर्मचारियों की मांगों को अनदेखा कर रही सरकार

हरिभूमि न्यूज. डबवाली

रिटायर्ड कर्मचारी संघ की बैठक शनिवार को राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल में हुई। बैठक में बड़ी संख्या में रिटायर्ड कर्मचारी उपस्थित हुए एवं लंबित मांगों व समस्याओं को लेकर विचार विमर्श किया। बैठक को संबोधित करते हुए प्रधान सुखवंत सिंह चीमा ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा संसद में पास किया गया नया वित्त विधेयक-2025 सेवानिवृत कर्मचारियों को वेतन संशोधन के लाभ से वंचित करता है। यह सेवानिवृत कर्मचारियों के साथ अन्याय है। उन्होंने मांग की कि सरकार केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ की तरह 65, 70, 75 वर्ष की आयु पार करने पर क्रमशः पेंशन में 10, 15, 20 प्रतिशत की बढ़ोतरी लागू करे ताकि रिटायर्ड कर्मचारी अच्छा जीवन गुजार सकें। पेंशन की आय को टैक्स मुक्त किया जाए। आज के जमाने में जैसे मेडिकल सुविधा बहुत महंगी हो गई है इसलिए मेडिकल भत्ता 3000 रुपए किया जाए। सभी बीमारियों के लिए कैशलेस मेडिकल सुविधा प्रदान की जाए। गुरतेज सिंह पीजीटी ने कहा कि रिटायर्ड कर्मचारियों को रेलगाड़ियों में किराए में 50 प्रतिशत छूट मिलती थी जोकि बंद कर दी गई है, उसे दोबारा बहाल किया जाए। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा कर्मचारियों की मांगों को लंबे समय से अनदेखा किया जा रहा है जिसे सरकार को जल्द पूरा करना चाहिए। सतीश कुमार व निर्मल सिंह सुंधा ने कहा कम्प्युटेशन की कटौती 15 वर्ष से घटाकर 12 वर्ष की जाए।

सिरसा। बैठक में भाग लेते रिटायर्ड कर्मचारी।

खबर संक्षेप

रेयांश ने कराटे में जीता गोल्ड मेडल

हिसार। जिला कराटे संघ की ओर से 14वीं हिसार कराटे कप चैम्पियनशिप का आयोजन सूरज स्पोर्ट्स अकेडमी, सुंदर नगर में किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों से आए 250 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया। सूरज कराटे प्लैनेट के कराटे चैंपियन रेयांश गुप्ता एवं प्रवीण हिन्दू ने अपनी पहली ही प्रतियोगिता में दमखम दिखाते हुए स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। रेयांश गुप्ता ने स्वर्ण पदक जीतकर अपने गुरुजनों हरीश सिराधना, विजय अग्रवाल व परिवार प्रवीण हिन्दू का नाम रोशन किया।

हेलीकॉप्टर की बुकिंग के नाम पर धोखाधड़ी, काबू

हांसी। थाना साइबर क्राइम हांसी पुलिस ने केदारनाथ धाम के लिए आनलाइन हेलीकॉप्टर की बुकिंग के नाम पर धोखाधड़ी करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी की पहचान उत्तरप्रदेश के बलरामपुर जिले के गांव परसा निवासी मुनीजर के रूप में हुई है। थाना साइबर क्राइम हांसी में तैनात एएसआई सज्जन कुमार ने बताया कि पकड़े गए आरोपी आरोपी ने 15 जून को केदारनाथ धाम की यात्रा के लिए हेलीकॉप्टर की बुकिंग करवाने के नाम पर नरेश के साथ 34800 रुपये की धोखाधड़ी की थी।

पिस्तौल व चार कारतूस के साथ एक काबू

हांसी। सीआईए स्टाफ हांसी पुलिस ने अवैध पिस्तौल पिस्तौल व चार कारतूस के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान पुठ्ठी मंगल खां निवासी कपिल के रूप में हुई है। मुख्य सिपाही मनोज कुमार ने बताया कि उन्हें गश्त के दौरान काबू किया गया।

चोरी की मोटरसाइकिल सहित आरोपी गिरफ्तार

नारनौंद। थाना बास पुलिस ने चोरी की मोटरसाइकिल सहित आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान बास बादशाह पुर निवासी सुनील के रूप में हुई है। थाना बास में तैनात एएसआई सुशील कुमार ने बताया कि पकड़े गए आरोपी ने 7 अगस्त को सायं करीब 8 बजे बास गांव से गली में खड़ी बाइक को चोरी कर लिया था। थाना बास पुलिस ने तत्परता से कार्रवाई करते हुए आरोपी को काबू कर लिया।

फर्जी दस्तावेज से जमीन की रजिस्ट्री करवाई, काबू

नारनौंद। पुलिस चौकी खेड़ी चौपटा ने फर्जी दस्तावेज तैयार कर जमीन की रजिस्ट्री करवाकर धोखाधड़ी करने के मामले में एक युवक प्रवीन निवासी वार्ड न. 29 रामनगर रोहतक रोड़ जीन्द से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस चौकी खेड़ी चौपटा प्रभारी एसआई अनिल कुमार ने बताया कि आरोपित युवक प्रवीन ने गांव कोथ कलां के किसी व्यक्ति की जमीन के फर्जी दस्तावेज तैयार कर किसी अन्य व्यक्ति के नाम रजिस्ट्री करवाई थी।

सांसद कुमारी सैलजा ने कार्यकर्ताओं को बांधी राखी

हिसार। रक्षाबंधन के पवित्र एवं पावन त्यौहार पर सांसद सैलजा के अर्बन एस्टेट स्थित आवास पर प्रदेश भर से काफी संख्या में कार्यकर्ता पहुंचे और उनसे राखी बंधवाई। सैलजा ने सभी को राखी बांधी व तिलक लगाकर उनका मुंह मीठा करवाया।

नशे के आदी व्यक्तियों की पहचान के लिए फार्म तैयार

हांसी। नशे के आदी व्यक्तियों को नशा छोड़ने में मदद करने और समाज को नशामुक्त बनाने के उद्देश्य से हांसी पुलिस ने एक नई पहल शुरू की है। इसके लिए हांसी पुलिस ने गूगल पर एक विशेष फॉर्म तैयार किया है। यह जानकारी पुलिस अधीक्षक ने दी है।

गांव बनभौरी में हुई चोरी का पर्दाफाश

पुलिस ने आरोपी को पकड़ 35 तोले सोने के आभूषण व अन्य सामान किया बरामद

कई बार चोरी के मामलों में गिरफ्तार होकर जींद, हिसार एवं सुनारिया रोहतक जेल में रह चुका आरोपी नीरज। निजी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वारदातों को अंजाम देने की है आरोपी की आदत।

हरिभूमि न्यूज ⏭बरवाला

बरवाला। प्रेसवार्ता में गांव बनभौरी में हुई चोरी की वारदात का खुलासा करते डीएसपी सुमित कुमार। *फोटो: हरिभूमि*

एंटी बर्गलरी एंड व्हीकल थेफ्ट (एबीवीटी) टीम प्रभारी ने करीब दस दिन पूर्व गांव बनभौरी में लाखों के जेवर तथा नकदी चोरी करने की बड़ी वारदात को अंजाम देने के मामले का खुलासा किया है। टीम ने इस मामले में आदतन आरोपी नीरज निवासी फरमाना, तहसील महम, जिला रोहतक को गिरफ्तार किया है।

आरोपी द्वारा अलग-अलग जगह से चुराए गए लगभग 35 तोले सोने के आभूषण, लगभग 1 किलोग्राम चांदी के आभूषण और चोरीशुदा 2 मोटरसाइकिल बरामद की है। आरोपी नीरज पर करीब तीन दर्जन चोरी, गृह भेदन, वाहन चोरी एवं पोक्सो एक्ट के तहत विभिन्न जिलों में अभियोग अंकित हैं। पुलिस टीम आरोपी से पूछताछ करने में लगी है। मामले का खुलासा करते हुए डीएसपी सुमित कुमार ने बताया कि एबीवीटी उप निरीक्षक धर्मवीर, एएसआई सुनील कुमार, एएसआई राकेश, एएसआई राजकुमार, एएसआई सुशील, मुख्य सिपाही धर्मवीर और सिपाही अनिल कुमार ने आरोपी नीरज निवासी गांव फरमाना को गिरफ्तार किया है। यह एक शातिर व आदतन आरोपी है, जिसे निजी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चोरी की वारदातों को अंजाम देने की आदत है। वह पूर्व में भी कई बार चोरी के मामलों में गिरफ्तार होकर जींद, हिसार एवं सुनारिया रोहतक जेल में रह चुका है।

सुनारिया जेल से बाहर आने के बाद बनाई नई प्लानिंग

जुलाई 2025 में सुनारिया जेल से सजा पूरी कर बाहर आने के बाद, नीरज ने अपने साथी सोनू निवासी किरोड़ी एवं सोनू के भाई संदीप के साथ चोरी की नई योजनाएं बनाई। जब यह जींद जेल में बंद था उस समय इसकी मुलाकात सोनू से हुई। 28/29 जुलाई की रात सोनू ने नीरज को संदीप से मिलवाया। संदीप, सोनू का भाई है। डीएसपी ने बताया कि तीनों ने संदीप के घर मिल चोरियां करने की योजना बनाई कि वे चोरी की वारदातों में एक दूसरे की मदद करेंगे और चोरी का सामान आपस में बांट लेंगे।

नीरज अंदर घुसा, संदीप बाहर करता रहा निगरानी

28/29 जुलाई 2025 की रात, योजना अनुसार संदीप व नीरज मोटरसाइकिल से गांव बनभौरी पहुंचे। नीरज मकान में घुसकर चोरी करता जबकि संदीप बाहर निगरानी करता। इस दौरान उन्होंने तीन अलग-अलग मकानों से सोने-चांदी के आभूषण, नकदी एवं एक मोटरसाइकिल चोरी की और गांव से बाहर जाकर चोरी का सामान आपस में बांट लिया।

शुरुआती पूछताछ में यह वारदातें कबूली

डीएसपी सुमित कुमार ने बताया कि पुलिस टीम द्वारा की गई प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी नीरज ने जिला हिसार, रोहतक, जींद, भिवानी, कैथल, दादरी आदि में चोरी की 10 वारदाते कबूल की है। जिनमें नकदी, सोने-चांदी के आभूषण और मोटरसाइकिल चोरी शामिल हैं। माह जुलाई में गांव फरमाना स्थित एक मकान से 11 हजार रुपये चोरी किए। 22/23 जुलाई 2023 रात को गांव पुर में एक मकान से सोने के आभूषण व रुपये चोरी किए। 25 जुलाई 2025 को गांव बास बडाला में एक मकान से 11 हजार रुपये चोरी किए थे। 27 जुलाई 2025 को गांव जाखोद खेडा से एक मकान से सोने के आभूषण व 12 हजार रुपये चोरी किए थे। इसी दिन गांव सलेमगढ में एक मकान से 18 हजार रुपये व गांव किरतान से एक मकान से सोने के आभूषण व एक मोटरसाइकिल चोरी की थी। इसके अलावा 29 जुलाई को गांव बनभौरी से एक मकान से सोने चादी के आभूषण व रुपये चोरी किए थे। इसी गांव से एक मोटरसाइकिल चोरी की थी। 3 अगस्त को गांव चिमनी में एक मकान से सोने चादी के आभूषण, रुपये व मोटरसाईकल चोरी की थी। गत 4 अगस्त को गांव रानिला मे मकानो से रुपये व आभुषण चोरी किये थे।

नारनौंद। विजेता टीमों को पुरस्कार देकर सम्मानित करते सरपंच रामअवतार शर्मा व अन्य। *फोटो: हरिभूमि*

हांसी, उकलाना और बरवाला की टीमों ने मारी बाजी

- गांव गुराना में तीन दिवसीय जिला स्तरीय खो-खो प्रतियोगिता का समापन

हरिभूमि न्यूज ⏭नारनौंद

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गुराना की खेल नर्सरी इन दिनों खो-खो खिलाड़ियों के उत्साह और जोश से गूंजती रही। यहां तीन दिवसीय जिला सत्रीय खो-खो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें जिले के विभिन्न ब्लॉकों से लड़के और लड़कियों की दर्जनों टीमें उतरीं। खेल मैदान पर हर दिन रोमांचक मुकाबले देखने को मिले तो दर्शकों ने भी खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाने में कोई कमी नहीं छोड़ी। प्रतियोगिता में लड़कियों के वर्ग में अंडर-14 वर्ग में हांसी प्रथम की टीम ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि हांसी द्वितीय की टीम उपविजेता रही। अंडर-17 वर्ग में हांसी प्रथम ने अपना दबदबा बनाए रखा और बरवाला की टीम दूसरे स्थान पर रही। अंडर-19 वर्ग में उकलाना की लड़कियों ने फुर्ती और रणनीति का शानदार मेल दिखाते हुए प्रथम स्थान पाया, जबकि हिसार प्रथम को दूसरा स्थान मिला। लड़कों के वर्ग में भी मुकाबले किसी से कम रोमांचक नहीं रहे। अंडर-14 वर्ग में हांसी प्रथम की टीम ने जीत दर्ज कर प्रथम स्थान, जबकि उकलाना को दूसरा स्थान मिला। अंडर-17 वर्ग में भी हांसी प्रथम ने अपनी बढ़त कायम रखते हुए जीत हासिल की।

विजेताओं को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया

समापन समारोह में सरपंच राम अवतार शर्मा और स्कूल प्रिंसिपल जिले सिंह ने विजेता और उपविजेता टीमों को ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर डीपीसी रामरतन, एईओ कुलदीप मलिक, डीईपी राकेश सुरेंद्र मलिक, सुरेंद्र मुजादपुर, सतीश पूनिया, मैच रेफरी रमेश चंद्र, रणबीर, कुलबीर, सोनू नफे सिंह, सत्यवान, सतीश नेहरा, कृष्ण, सुरेंद्र और बलजीत मेम्बर सहित कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

रॉयल स्कूल में राखी का पर्व मनाया

- विद्यार्थियों ने अमेरिकी वस्तुओं के बहिष्कार की शपथ ली

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

रॉयल इंटरनेशनल रेजिडेंशियल स्कूल खाराखेड़ी में रक्षा बंधन के पावन पर्व पर एक विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया, जिसमें उत्सव के साथ-साथ देशभक्ति का भाव भी झलकता नजर आया। कार्यक्रम का संचालन कक्षा आठवीं की श्वेता और दीक्षा ने आत्मविश्वास के साथ किया। कार्यक्रम की शुरुआत एकनूर द्वारा प्रेरणादायक हिन्दी भाषण और प्रमंजय द्वारा प्रभावशाली अंग्रेजी भाषण से हुई, जिसमें रक्षा बंधन के महत्व, भाई-बहन के प्रेम और एकता के संदेश को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया। इसके बाद कक्षा दूसरी के विद्यार्थियों द्वारा मनमोहक नृत्य प्रस्तुति दी गई, जिसने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम में कक्षा नौवीं के अभिजोत ने अपनी मधुर आवाज में सुंदर गीत प्रस्तुत कर सभा को भावविभोर कर दिया। सभा में एक विशेष क्षण तब आया जब विद्यार्थियों ने हाल ही में अमेरिका द्वारा लगाए गए शुल्कों के विरोध में अमेरिकी वस्तुओं के बहिष्कार की शपथ ली। स्कूल चेयरमैन डॉ. युद्धवीर सिंह, स्कूल संचालिका डॉ. ज्योत्स्ना, स्कूल प्रशासक श्री विक्रमादित्य, सैनिक स्कूल कमांडेंट कर्नल (डॉ.) डीवी नेहरा (रिटायर्ड) ने सभी को रक्षाबंधन के पर्व की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर उप-प्रधानाचार्या प्रगति सिंह, सीनियर कोऑर्डिनेटर पूनम बिश्नोई, सह पाठ्यचर्या गतिविधि प्रभारी वर्षा और सभी अध्यापक गण उपस्थित रहे।

हिसार। रॉयल इंटरनेशनल रेजिडेंशियल स्कूल में रक्षाबंधन पर्व मनाते बच्चे। *फोटो: हरिभूमि*

बास पुलिस ने आईटीआई भकलाना में छात्रों को किया जागरूक

नारनौंद। थाना बास प्रभारी मनदीप कुमार ने आईटीआई भकलाना में विद्यार्थियों को नशे, साइबर क्राइम व ट्रैफिक नियमों के बारे जागरुक किया। उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यदि हम सुरक्षित रहना चाहते हैं तो हमे ट्रैफिक नियमों की पालना भी करनी होगी। हम सब यातायात नियमों की पालना करते हुए खुद को सुरक्षित रखने के साथ-साथ दूसरों को भी सुरक्षित रख सकते है। वाहन चलाते समय नियमो का पालन कर सड़क दुर्घटना से बचा जा सकता है। साइबर क्राइम के बारे में जागरुक करते हुए कहा कि साइबर ठगी के मामले तेजी से बढ़ते जा रहे है।

परम मित्र कन्या विद्या निकेतन स्कूल की छात्राओं ने पुलिस कर्मियों को बांधी राखी

हरिभूमि न्यूज ⏭नारनौंद

परम मित्र कन्या विद्या निकेतन स्कूल खांडा खेड़ी की छात्राओं ने नारनौंद थाना प्रभारी बलवान सिंह सहित सभी पुलिस कर्मचारियों को राखी बांधकर रक्षाबंधन का पर्व धूमधाम से मनाया। आठवीं व नौवीं कक्षा की छात्राओं दिव्या, साइना, निधि, पूर्वी, शनवी, जिया, पलक, माही, अंतिम और सुहाना ने पुलिस कर्मियों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधकर उनके दीर्घायु और सुरक्षा की कामना की। स्कूल प्राचार्य अमित गौड़ ने कहा कि यह पहल छात्राओं में देशभक्ति और सुरक्षा बलों के प्रति सम्मान की भावना को मजबूत करती है। थाना प्रभारी बलवान सिंह ने छात्राओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि यह रिश्ता सिर्फ रक्षा का नहीं बल्कि विश्वास, सम्मान और आपसी सहयोग का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि पुलिस सदैव नागरिकों की सुरक्षा और सेवा में तत्पर है, और ऐसे अवसर उन्हें और अधिक जिम्मेदारी से कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। छात्राओं ने बताया कि रक्षाबंधन के दिन वे अपने भाइयों के साथ-साथ उन पुलिसकर्मियों को भी राखी बांधना चाहती थीं जो दिन-रात समाज की रक्षा में जुटे रहते हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस कर्मी हमारे अभिभावकों की तरह हर समय हमारी सुरक्षा करते हैं, इसलिए वे भी हमारे भाई जैसे हैं। इस अवसर पर स्कूल प्राचार्य अमित गौड़, प्रशासक मनदीप सिंधु, प्रवीण कुमार और मीनू रानी भी मौजूद रहे।

नारनौंद। पुलिस कर्मचारियों की कलाई पर राखी बांधती स्कूल की छात्राएं।

शांति निकेतन पब्लिक स्कूल में राखी बनाओ प्रतियोगिता आयोजित

आदमपुर। रक्षाबंधन के पावन अवसर पर शांति निकेतन पब्लिक स्कूल में /"राखी बनाओ प्रतियोगिता/" का सुंदर और भावनात्मक आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया और अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हुए रंग-बिरंगी, आकर्षक व कलात्मक राखियां तैयार कीं। छात्रों ने मोती, रेशमी धागे, सितारे और अन्य सजावटी वस्तुओं का प्रयोग करते हुए परंपरा और नवीनता का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया। इन राखियों में बच्चों के भाव, संस्कार और कला कौशल स्पष्ट रूप से झलकते थे।

हर्षिका व मृदुल रतन ने पाया द्वितीय स्थान

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

दिल्ली पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने ओपी जिंदल मॉडर्न स्कूल में आयोजित अंतर विद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिता मे अपनी उत्कृष्ट वक्तृत्व कला और तार्किक प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया तथा विद्यालय की डिबेटिंग टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया । व्यक्तिगत उपलब्धियाओं के अंतर्गत कक्षा बारहवीं की हर्षिका फोगाट फर्स्ट रनर अप तथा कक्षा ग्यारहवीं के मृदुल रतन थर्ड रनर रहे। इन विद्यार्थियों के इस शानदार प्रदर्शन के पीछे विजेता मार्गदर्शक अध्यापिका डॉ. दीपिका गोदारा, अंग्रेजी विभागाध्यक्ष अतुल जैन तथा पूरे अंग्रेजी विभाग का परिश्रम रहा। विद्यालय प्रधानाचार्या मंजु सुधाकर ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे विद्यार्थियों ने न केवल विद्यालय का नाम रोशन किया है।

हिसार। ट्रॉफी प्राप्त करते दिल्ली पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी। *फोटो: हरिभूमि*

एकता पब्लिक स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाया रक्षाबंधन पर्व

हांसी। एकता पब्लिक स्कूल (द ईपीएस) प्रांगण में रक्षाबंधन का त्योहार बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विद्यालय में राखी बनाओ और उपहार बनाओ क्रियाकलाप का आयोजन किया गया, जिसमें बहनों ने अपने भाइयों के लिए अपने हाथों से राखियां बनाई और भाइयों ने अपनी बहनों को देने के लिए अपने हाथों से उपहार बनाए, विद्यार्थी रंग-बिरंगे परिधानों में बहुत ही सुंदर दिखाई दे रहे थे। कार्यक्रम के दौरान स्कूल की सभी लडकियों ने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर कलाई पर राखी बांधी और मिठाई खिलाई, और भाइयों ने बहनों को आकर्षक उपहार दिए। इस अवसर पर स्कूल प्राचार्या पूजा मुंजाल ने लोकगाथा के माध्यम से बच्चों को रक्षाबंधन पर्व की महत्ता बताई। उन्होंने बताया कि रक्षा बंधन भारतीय परम्परागत त्योहारों में से एक है, जो भाई-बहन के प्यार और संबंधों का प्रतीक है। जिसमें बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती है और भाई उसकी सुरक्षा का वादा करता है।

एनएचएम कर्मचारियों ने की नारेबाजी

वेतन नहीं मिलने पर काली राखी बांध रोष जताया

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

चार माह से वेतन नहीं मिलने से नाराज एनएचएम कर्मचारियों ने शनिवार को सिविल सर्जन कार्यालय के बाहर रक्षाबंधन के पावन पर्व पर काली राखी कार्यक्रम आयोजित किया। इस दौरान एनएचएम महिला कर्मचारियों ने पुरुष साथियों की कलाई पर काली राखी बांधी, काला टीका लगाया और गुड़ खिलाया। पुरुष कर्मचारियों ने भी बहनों के मान-सम्मान में खाली लिफाफे देकर वेतन न मिलने की पीड़ा को दर्शाया। एनएचएम कर्मचारियों ने बताया कि 11 अगस्त से 15 अगस्त तक सुबह 10 से 12 बजे तक अपनी-अपनी संस्था पर कार्य बहिष्कार किया जाएगा। यदि 16 अगस्त तक लंबित 4 माह का वेतन और आगे हर माह समय पर भुगतान का बजट प्रावधान नहीं किया गया, तो भारतीय मजदूर संघ के साथ मंत्रणा कर अगले चरण का आंदोलन तय किया जाएगा।

हिसार। सिविल सर्जन कार्यालय के बाहर काली राखी कार्यक्रम आयोजित करते एनएचएम कर्मचारी। *फोटो: हरिभूमि*

बार-बार वार्ता के बाद भी नहीं मिला वेतन

कार्यक्रम में भारतीय मजदूर संघ से संबंधित स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के प्रदेश महामंत्री जगत बिसला ने कहा कि एनएचएम कर्मचारी केंद्र और राज्य सरकार की स्वास्थ्य योजनाओं को धरातल पर पूरी निष्ठा, मेहनत और लगन से लागू करते हैं, लेकिन बदले में सरकार व प्रशासन पिछले चार माह से वेतन का भुगतान नहीं कर रही है। यह कर्मचारियों के आर्थिक, मानसिक और सामाजिक शोषण का स्पष्ट उदाहरण है। जिला अध्यक्ष अनिल कुमार और जिला मंत्री मनोज कौशिक ने कहा कि बार-बार वार्ता के बावजूद वेतन न मिलना हरियाणा सरकार और मुख्यमंत्री की कार्यकुशलता पर सवाल खड़े करता है।

कर्मचारियों को यह आ रही दिक्कतें

उन्होंने बताया कि वेतन न मिलने से कई कर्मचारियों के बच्चों की फीस न देने के कारण नाम कट गए है। बैंक लोन की किश्तें समय पर न चुकाने से कर्मचारी बैंक डिफॉल्टर हो गए हैं। रिश्तेदारों व मित्रों से लिया गया कर्ज न चुकाने से सामाजिक प्रतिष्ठा प्रभावित हुई है। घर का राशन और दवाइयां तक खरीदना मुश्किल हो गया है। इन तमाम परिस्थितियों के बावजूद एनएचएम कर्मचारी अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते रहे हैं, लेकिन अब मजबूरी में आंदोलन का रास्ता अपनाने पर विवश हैं। इस मौके पर कौशल्या, दर्शना, पूनम, सोनिया, जयश्री, सुनीता, कमलेश, सुमन, मोनिका, सुमित शर्मा, संदीप, मोहन, सुल्तान, अरविंद सहित अनेक कर्मचारी उपस्थित रहे।

हांसी बस स्टैंड पर शौचालय ठेकेदार की मनमानी

हांसी। रक्षाबंधन के दिन प्रदेश सरकार ने जहां अपने भाइयों को राखी बांधने जाने वाली महिलाओं के लिए रोडवेज बसों में मुफ्त यात्रा की सुविधा दी गई थी। वहीं दूसरी तरफ हांसी बस स्टैंड पर नगर परिषद द्वारा ठेके पर दिए गए शौचालय में महिलाओं से तय शुल्क से दोगुने रुपये वसूले गए। इस मनमानी वसूली ने त्योहार के दिन महिलाओं को परेशानी में डाल दिया और उन्हें शौचालय प्रयोग करने पर दोगुने रुपये देने पड़े। शौचालय के बाहर रेट लिस्ट भी चस्पा नहीं की गई थी। बता दें कि रक्षाबंधन के अवसर पर शनिवार को हांसी बस स्टैंड पर नगर परिषद द्वारा बनाए गए शौचालय का इस्तेमाल करने पर महिलाओं से 10 रुपये शुल्क मांगा गया। जबकि निर्धारित दर इससे आधी है। शिकायत मिलने पर रोडवेज विभाग के इंचार्ज राजवीर सिंह सिवाच ने मौके पर जाकर शौचालय में बैठे कारिंदे से दोगुने रुपये वसूले जाने की वजह पूछी तो वह कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे पाया और जब उससे शौचालय प्रयोग करने की रेट लिस्ट मांगी, तो वह रेट लिस्ट भी दिखाने में असमर्थ रहा। इसके बाद बस स्टैंड इंचार्ज ने ठेकेदार से फोन पर बात कर मामले का कारण पूछा तो ठेकेदार ने जवाब दिया कि वह ड्यूटी पर बैठे कारिंदे को समझा देगा।

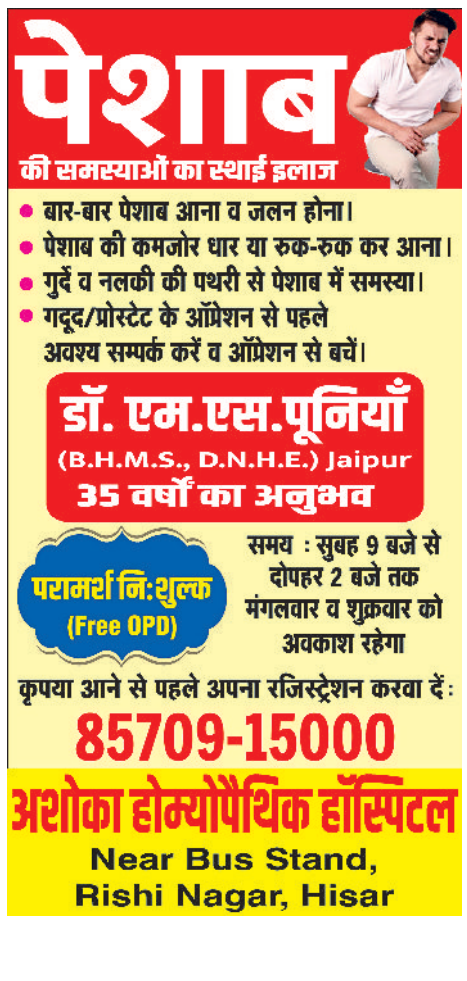

haribhoomi.com

हरिभूमि रविवार भारती

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

स्वाधीनता दिवस विशेष

रोहतक, रविवार
10 अगस्त 2025

P-1

आवरण कथा
ओम निश्चल

हम सब देशवासी आगामी 15 अगस्त 2025 को भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाएंगे। कदम-कदम आगे बढ़ते हुए हमने कई अभूतपूर्व सफलताएं हासिल कीं, नए-नए मुकाम को छुआ। हम निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर भी हैं। लेकिन आज भी देश में कुछ ऐसी चुनौतियां बरकरार हैं, जिनका निवारण किए बिना हम अपना प्राचीन गौरव प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इसके लिए देश के हर नागरिक के मन में स्वाधीनता के प्रति सम्मान भाव होना अत्यंत आवश्यक है।

79वां स्वतंत्रता दिवस

आजादी की फलश्रुति

एक-एक कदम हौले-हौले चलते हुए हम सब भारत देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं। एक लंबी यात्रा हमने आजादी के बाद तय कर ली है। 1947 से 2025 तक की स्वातंत्र्योत्तर यात्रा में देश ने तमाम क्षेत्रों में बहुत तरक्की की है, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की है वरना एक ऐसा दौर था, जब गेहूं भी अमेरिका से आयात करना पड़ता था। उद्योग धंधों के क्षेत्र में भी लघु उद्योग सेक्टर और मझोले उद्योगों की स्थापना एवं विकास में देश ने मजबूती से कदम रखा है। तकनीकी सामर्थ्य की दिशा में भी देश ने अग्रतर स्थिति हासिल की है। आजादी के बाद बनी पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप हर क्षेत्र में देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य हुआ। आजादी के बाद देश में बड़े-बड़े बांध बने, विद्युत परियोजनाएं लगाई गईं, सिंचाई के लिए नहरों का संजाल तैयार किया गया। बड़े-बड़े हाईवेज बने, इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ ताकि हर व्यक्ति को बैंकिंग योजनाओं का लाभ मिले। यानी, आजादी के बाद देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है।

हर वर्ग ने निभाई अपनी भूमिका: आजादी की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, मजहब, संस्कृति या समुदाय ने नहीं लड़ी थी। इसमें तैंतीस करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी रही थी। राजनैतिक आजादी तो सन 1947 में ही हमें मिल गई थी। लेकिन आजादी का मिलना तब सार्थक हो सकता है, जब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हर क्षेत्र में देश तरक्की, करता हुआ दिखे। यों तो इस आजादी को हासिल करने में नेता, पत्रकार, किसान, मजदूर, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबका योगदान रहा। उसके परिणामस्वरूप ही हमें आजाद भारत मिल सका। आजादी के बाद हासिल उपलब्धियों को तो हम सब देखते ही हैं, लेकिन एक लेखक हर क्षेत्र में आजादी की आकांक्षाओं के प्रतिफल को गहराई से महसूस करता है। वह नेता, अभिनेता, चिंतक, समाजशास्त्री एवं अर्थशास्त्री आदि अनेक भूमिकाओं में होता है। वही होता है, जो बिना लाग-लपेट के देश की वाकई तरक्की को अपने मानक पर कसता है, तभी वह दुष्यंत कुमार के शब्दों में यह लिख सकता है- *यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां। हमें मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।*

दुर्भाग्यवश धीरे-धीरे कलमकार भी अपनी नैतिकता भूलते गए। इसी पर कवि गोपाल सिंह नेपाली ने अपने एक गीत में लिखा है- *तुझ-सा लहरों में बह लेता/ तो मैं भी सत्ता, गह लेता/ ईमान बेचता चलता तो/ मैं भी महलों में रह लेता/ हर दिल पर झुकती चली मगर/ आंसू वाली नमकीन कलम/ मेरा धन है स्वाधीन कलम/ आजादी मिलने का मोह भंग भी हुआ।*

धीरे-धीरे लेखक की स्वाधीन चेतना भी सुप्त हो गई, उसकी कलम पूंजीपतियों और इजारेदारों के गुण गाने लगी। यही वजह है कि विभाजन के दंश और आजादी के लिए 1857 से किए गए संघर्ष के बाद और जलियांवाला बाग के नृशंस हत्या कांड के बाद मिली आजादी का फल लूटने में होड़ लग गई। देश बनाने वाले और उसे स्वाधीन कराने वाले तो नेपथ्य में चले गए और स्वार्थी लोग चांदी काटने लगे।

आजादी मिलने के बाद आजादी मिलने का मोहभंग भी उतना ही प्रभावी हुआ और होता गया। यह ऐसा ही दौर था, जब 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'राग दरबारी' जैसी रचनाएं लिखी गईं। लिहाजा आजादी मिलने की उपलब्धियों की बंदरबांट होने लगी।

आजादी के शुरुआती दौर में अज्ञेय जैसे कद्दावर लेखक ने भी एक निबंध में लिखा था, 'मिला सब कुछः सब बेपेंदी का। शिक्षा मिली उसकी नींव, आत्म गौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, उसकी नींव, अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली, यानी आजादी में जन्मे-पले मुझको-आजादी के आदि पुरुष को चेहरा मिला, व्यक्तित्व नहीं मिला... और बिना व्यक्तित्व के चेहरा क्या होता है? स्पष्ट है कि वह फकत चेहरा होता है। पहन लो, उतार लो, उस पर अलकतरा पोत दो चूना लगा दो... और यही सब तो हम कर रहे हैं... हर कोई कर रहा है।' (कवि मन, पृष्ठ 63) हमारे समय के एक बड़े कवि का यह विक्षुब्ध कथन है आजादी और उसकी फलश्रुति को लेकर।

क्यों बंटते गए दायरों में हमः यह सोचने की बात है कि जिस जज्बे से आजादी पाने के लिए हर नागरिक संघर्षरत था। सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण के लोग, यहां तक कि पूंजीपति भी देश की आजादी के लिए तन, मन, धन से लगे थे। सभी में राष्ट्रीय चेतना की अलख जग रही थी। भले आजादी के महासमर में गांधी, सुभाषचंद्र बोस, नेहरू और पटेल जैसे चंद बड़े नायक ही नजर आते हों पर आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

वैश्विक शक्ति बनने का सामर्थ्यः इतनी विषमताओं के बावजूद, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' भारत विश्व की कूटनीति के सम्मुख अडिग होकर खड़ा रह पाया है तो यह इसकी सफल विदेश नीति का ही परिचायक है। देखते-देखते देश तरक्की की पायदान पर अग्रसर है। देश तमाम क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हुआ है, जहां सुई तक नहीं बनती थी, आज हम अनेक चीजें, शोधित तेल, खाद्यान्न, वस्त्रादि विदेशों को निर्यात कर रहे हैं। अमेरिकी प्रभुत्व में सिलीकॉन वैली के भारतीय तकनीकविदों की बड़ी भूमिका है। भारत आजादी के इन अठहत्तर सालों में आज आर्थिक स्तर पर एक महाशक्ति बन चुका है। सैन्य शस्त्रों और अंतरिक्ष शोध के क्षेत्र में हम निरंतर नए क्षितिज को स्पर्श कर रहे हैं। यही नहीं सदियों पुरानी अपनी संस्कृति व ज्ञान परंपरा के नाते हम विश्वगुरु बनने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह ऋषियों, संतों, महात्माओं की तपोभूमि रही है, यह अपरिग्रह, सदाचार, अहिंसा और सर्वधर्मसमभाव की भूमि है। हमने पूरी विश्व-वसुधा को मानवता के नाते एक समझा है। हमने विश्व के कमजोर मुल्कों का हर मुसीबत में साथ दिया, हर स्तर पर विश्व शांति की पहल और अपीलें की हैं। हमने विश्व स्तर पर रंगभेद का विरोध किया। इसीलिए विश्व में हमारी सबसे अलग प्रतिष्ठा है।

सशक्त राष्ट्र निर्माण में निभाएं भूमिकाः हालांकि अभी हमारे सम्मुख चुनौतियां भी कम नहीं हुई हैं। चिंता इस बात की है कि दलीय संकीर्णताएं ज्यादा हावी हैं, जाति, मजहब विचारधारा और सामाजिक स्तर पर लोग बंटे-बंटे से नजर आते हैं। आज आजाद हुए 78 साल हो गए हैं पर हम न भूलें कि अब यह बाहर से दिखने वाली गुलामी का दौर नहीं, यह सूक्ष्म गुलामी का दौर है- हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे सोच पर हमले इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है। ऐसे सूक्ष्म हमलों के प्रति हमें सावधान रहना है। सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हमें आपस में बांटने वाली सोच और अलगाववादी ताकतों से सावधान रहना होगा। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जहां हर नागरिक स्वाभिमान का अनुभव कर सके और उसे यह लगे कि यह देश उसका है, उसके सुख-दुख का साथी और उसके हितों का पहरुआ है। तभी सही मायने में देश का हर नागरिक स्वयं को आजाद, समृद्ध और सुरक्षित महसूस करेगा। इसके लिए हम सभी को अपने-अपने स्तर पर भूमिका निभाने के लिए संकल्पित होना होगा। *

सदियों के संघर्ष के बाद आर्थिक रूप से कमजोर देश रहा भारत, आज अगर विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना है तो इसके पीछे हमारा निरंतर संघर्ष और सही दिशा में किया गया प्रयास ही रहा है। कैसे हासिल की हमने यह उपलब्धि, उस पर एक नजर।

हर चुनौती को पार कर

हम बने आर्थिक महाशक्ति

उपलब्धि
लोकमित्र गौतम

दो शताब्दियों तक परतंत्र रहने के बाद जब 1947 में भारत आजाद हुआ, तो हमें राजनीतिक आजादी तो मिल गई, लेकिन आर्थिक आजादी अभी भी दूर का सपना था। इस राजनीतिक आजादी के लिए हमने विभाजन की जो विभीषिका झेली थी और ढाई शताब्दियों तक हमारा जिस तरह से औपनिवेशिक शोषण हुआ था, उस सबके कारण कृषि पर आधारित हमारी अर्थव्यवस्था बेहद पिछड़ी हुई थी और औद्योगिकीकरण का हमारे पास लगभग न के बराबर आधार था। ऐसे में आजादी के बाद भारत को अपनी आर्थिक दिशा खुद तय करनी थी। हर तरफ चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। लेकिन इन्हीं चुनौतियों के बीच से हमने 78 सालों में अपनी जो आर्थिक यात्रा तय की है, वह महज आंकड़ों का खेल नहीं है। वह हमारे 78 वर्षों की अथक मेहनत, आत्मावलोकन और साहसिक निर्णयों का परिणाम है।

फर्श से पहुंचे अर्श परः हमारी आर्थिक उपलब्धि, किसी तरह की तुलना या इम्तिहान के लिए नहीं है। हमने पिछले 78 सालों में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वो हमारे आत्मगौरव की जीती-जागती कहानियां हैं। साल 1947 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद आज की कीमतों पर महज 2.7 लाख करोड़ रुपए था। जबकि 78 सालों बाद आज हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और 2024-25 के आकलन के मुताबिक हमारा सकल घरेलू उत्पाद 33.2 लाख करोड़ रुपए है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमने 78 सालों में करीब 3100 फीसदी आर्थिक प्रगति की है। ये उपलब्धियां और ये आर्थिक विकास हमने पिछले 78 सालों में दिन-रात की मेहनत के बाद हासिल किया है।

करना पड़ा कठिन संघर्षः जब भारत से अंग्रेज गए थे, तो हमारा औद्योगिक उत्पादन नगण्य था। हमारा बुनियादी ढांचा पूरी तरह से ध्वस्त था, क्योंकि आजादी के लिए हमने 1857 से लेकर 1947 तक यानी 90 साल तक युद्ध लड़ा था। इस कारण अंग्रेज इस दौरान भारत के अधिक से अधिक संसाधन लूटकर इंग्लैंड ले गए थे और जब उनको ये मालूम पड़ा कि वह अब भारत में नहीं रह सकते, तो उन्होंने हमारे बुनियादी आर्थिक विकास पर विशेषकर औद्योगिक विकास पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने ढाई सौ सालों के कार्यकाल में उन्होंने जो आर्थिक ढांचा खड़ा किया था, उसे भारत से जाने के पहले बुरी तरह से ध्वस्त कर दिया था। जिस समय भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ था, हम मूलतः कच्चा माल आपूर्ति करने वाले एक उपनिवेश देश भर थे। इसलिए जरूरी था कि आजादी के बाद भारत का पूरी तरह से आर्थिक पुनर्निर्माण होता और ऐसा ही हुआ।

निरंतर बढ़ते रहे आगेः साल 1950 से 1980 के दौरान भारत ने नियोजित अर्थव्यवस्था की जबर्दस्त कीमत चुकाई। क्योंकि योजनाबद्ध ढंग से विकास करने का एकमात्र यही रास्ता था। जिस कारण लंबे समय तक हमारी आर्थिक विकास दर 3 से 3.5 के बीच रही। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसी विकास दर के दौरान हम परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, हरित क्रांति और देश में भारी उद्योगों का निरंतर जाल भी बिछाते रहे, जो हमारी अथक मेहनत और दूरदृष्टि का नतीजा था।

लागू किए आर्थिक सुधार कार्यक्रमः 78 सालों के विकास क्रम को देखें तो 1991 के बाद वैश्विक दबावों के बीच हमने आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किए, विशेषकर 1991 में तब, जब हमारे पास सिर्फ 15 दिनों के आयात भर के लिए विदेशी मुद्रा शेष थी। उस समय हमने आईएमएफ के पास अपना सोना गिरवी रखकर कर्ज लिया और आज स्थिति यह है कि हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर से भी ज्यादा का है। 2024 में तो एक समय यह 724 अरब डॉलर की ऊंचाई को भी पार कर गया था। आज भारत आईटी, फार्मा, रक्षा, डिजिटल पेमेंट, अंतरिक्ष और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है।

दूर करनी होंगी कमजोरियांः हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था की कुछ बड़ी कमजोरियां भी हैं, जो आज भी हमें प्रतिव्यक्ति आय के मामले में दुनिया के गरीब देशों की कतार का हिस्सा बनाती हैं। आज भी भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार नहीं है, जिस कारण गांवों से शहरों की ओर तूफानी रफ्तार से पलायन हो रहा है। हमारे देश के असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों की आज भी पहाड़ सरीखी चुनौतियां हैं और आज भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार का 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कच्चे तेल के आयात पर खत्म होता है। बावजूद इसके भारत आज अपने आपमें एक आर्थिक शक्ति है। साल 2017 के बाद से अब तक हम दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाले देश हैं। *

दोहे / प्रो. शरद नारायण खरे

शोभित,सुरभित,तेजमय,पावन अरु अभिराम।
राष्ट्र हमारा मान है, लिए उच्च आयाम।।

राष्ट्र-वंदना मैं करूं, करता हूं यशगान।
अनुपमेय, उत्कृष्ट है, भारत देश महान।।

नदियां, पर्वत, खेत, वन, सागर अरु मैदान।
नैसर्गिक सौंदर्यमय, मेरा हिंदुस्तान।।

लिए एकता अति मधुर, गीता और कुरान।
दीवाली-होली सुखद, एक्यभाव-पहचान।।

सारे जग में शान है, मान रहा संसार।
राष्ट्र हमारा है प्रखर, फैलाता उजियार।।

मातु-पिता, गुरु, नारियां, पातीं नित सम्मान।
संस्कार मम राष्ट्र की, है चोखी पहचान।।

तीन रंग के मान से, हैं हम सब अभिभूत।
राष्ट्रवंदना कर रहे, भारत मां के पूत।।

राष्ट्रप्रेम अस्तित्व में, आया नवल विहान।
कण-कण करने लग गया, भारत का यशगान।।

भारत की सीमाओं पर, जमे हुए हैं लाल।
शौर्य, वीरता देखकर, होते सभी निहाल।।

आजादी की वंदना, करता सारा देश।
आओ, हम रच दें यहां, वासंती परिवेश।।

सरोकार
शैलेंद्र सिंह

तब नई पीढ़ी भी समझेगी

स्वाधीनता की कीमत

देश की जो पीढ़ी पिछली सदी के अंत में या इक्कीसवीं सदी में जन्मी है, उसकी जीवनशैली कई मायने में विशिष्ट है। इसलिए उनको स्वाधीनता की कीमत समझाने के लिए कुछ अलग प्रयास करने होंगे।

आजादी का मतलब सिर्फ गुलामी से मुक्ति भर नहीं होता। आजादी उस आत्मसम्मान, अधिकार और स्वाभिमान की अनुभूति है, जो किसी भी समाज के पूर्ण विकास के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन जब हम आजादी की 78वीं वर्षगांठ पर अपनी डिजिटल पीढ़ी यानी जेन जेड और अल्फा जनरेशन की तरफ नजर उठाकर देखते हैं, तो बहुत निराशा होती है, क्योंकि इन्हें आजादी की कीमत का मानो कोई भान ही नहीं है। दरअसल, इन पीढ़ियों के लिए आजादी एक डिफॉल्ट सेटिंग की तरह है। ये पीढ़ी किसी संघर्ष या बलिदान की विरासत की हिस्सेदार नहीं रही है और न ही इसे आजादी के लिए अपनी जिंदगी में किसी तरह की कोई कीमत चुकानी पड़ी है। ऐसे में इन्हें आजादी की कीमत भी समझ आए तो भला कैसे?

डिजिटल जनरेशन की दुनियाः हमारी जेन जेड और अल्फा जनरेशन वास्तव में डिजिटल जनरेशन है। इनकी दुनिया इसके पहले की पीढ़ियों से बिल्कुल अलग है। इन्हें 24X7 मोबाइल चाहिए, रील चैटबॉट और इंस्टेंट रिवॉर्ड्स भी चाहिए। इनके पास सूचना का अकूत भंडार है, लेकिन अपने अनुभवों की मुट्ठी भर पूंजी नहीं है। स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, पसंद का पहनावा और प्यार जैसी हर चीज पर इनका अधिकार है और इनको लगता है यह तो सब जन्मसिद्ध अधिकार है यानी, ये तो हर किसी को मिलते ही मिलते हैं। इनके दिमाग में कभी नहीं आता कि संविधान प्रदत्त अधिकार हमें कितनी कुर्बानियां देकर मिले हैं? हमारी पूर्वज पीढ़ियों को इन्हें पाने के लिए कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं? न जाने कितने लोग जेल गए, न जाने कितने लोग जेल में ही मर गए, हजारों लोगों ने फांसी का फंदा चूमा। आजादी के लिए अपने सारे सपनों को दांव पर लगा दिया, तब कहीं जाकर हमें यह आजादी मिली है। लेकिन डिजिटल जनरेशन को इस सबका प्रायः कोई एहसास नहीं होता है।

नए जमाने की जीवनशैलीः हालांकि यह नई जनरेशन संवेदनहीन नहीं है। जलवायु परिवर्तन के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए, लैंगिक समानता के लिए और जानवरों को लेकर संवेदनशीलता इस पीढ़ी में भी खूब है। मगर अपने जमाने के मुद्दों के लिए। नई पीढ़ी विरोध और विद्रोह करने से नहीं डरती बल्कि पिछली पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यवस्थित सुधारों और बदलावों की मांग करती है। लेकिन देखने वाली बात यह है कि इसका ज्यादातर विरोध ऑनलाइन होता है या कहें यह ऑनलाइन विरोध के लिए खुद को ज्यादा फिट पाती है। वास्तविक धरातल पर इसे उतरना कम पसंद है। उनकी इस सोच के लिए नई पीढ़ी को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली पुरानी पीढ़ी को भी कुछ बातें याद रखनी होंगी। पुरानी पीढ़ी के लोग सोचते हैं देश, दुनिया, इतिहास और वर्तमान को लेकर जिस तरह की सोच वो रखते हैं, वैसी ही यह नई पीढ़ी भी रखे। सवाल है, आज की पीढ़ी क्यों अपनी पिछली पीढ़ियों की तरह आजादी को लेकर संवेदनशील नहीं है?

पिछली पीढ़ी निभाए दायित्वः मध्य वय और बुजुर्ग वय से गुजर रही पीढ़ी को समझना होगा कि सिर्फ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की बात करने भर से नई पीढ़ी आजादी की लंबी लड़ाई को लेकर अपने पूर्वजों की कृतज्ञ नहीं हो जाएगी। हमें इस पीढ़ी को उन लाखों लोगों की सच्ची कहानियां भी बतानी होगी, जो साधारण लोग थे और आजादी के लिए कुर्बान हो गए। हजारों किसान, लाखों मजदूर, आदिवासी, स्त्रियां, पत्रकार, आम दस्तकार और शिक्षक जैसे सैकड़ों विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने आजादी के लिए अपने आपको मिटा दिया। हमारी नई पीढ़ियां आजादी में सांस ले सकें, इसलिए पुरानी पीढ़ियों ने खुद को आजादी के संघर्ष की नींव में कैसे गला दिया। हमें नई पीढ़ी को बिना लाग-लपेट के, बिना किसी तरह के अतिवादी जिक्र के, इन आम लोगों के दुख दर्द को भी साझा करना होगा। हमें नई पीढ़ी को ये समझाना होगा कि लाखों जीवंत उदाहरणों से कि हमें जो आजादी मिली है, वह तर्क-वितर्क से नहीं मिली, वह कुछ गिने चुने लोगों के प्रताप से नहीं मिली बल्कि लाखों लोगों की कुर्बानियों से मिली है। जब हम अपनी नई जनरेशन को आजादी की लड़ाई लड़ने वाली पीढ़ी का समूचा ब्योरा सौंपेंगे, तब कहीं जाकर इस पीढ़ी में इस सबके प्रति संवेदना उमड़ेगी। हमें नई पीढ़ी को बताना होगा कि संविधान का उपहार हमें यूं ही नहीं मिल गया।

उनके सवालों का दें तार्किक जवाबः नई पीढ़ी अकसर सवाल पूछती है कि स्वाधीनता सेनानियों ने ऐसा क्यों नहीं किया? वैसा क्यों नहीं किया? तो हमें इस पीढ़ी को बताना होगा कि यह पूरा मसला महज कुछ चाहने और कह देने भर का नहीं था। ये बेहद जटिल और बेहद दुरुह मसले थे, इतना आसान नहीं है यह कहना कि फलां ने यह क्यों नहीं किया? कई बार इतिहास की कुछ विरासतें हमारे नियति का हिस्सा होती हैं। विभाजन भी ऐसी ही नियति थी। पुरानी पीढ़ी को जरूरत है कि वह नई पीढ़ी के लिए सिर्फ उपदेशक न बने, बल्कि इस बात की गहराई से पड़ताल करे कि आखिर उसे आजादी के अथक संघर्ष को लेकर उतनी संवेदनशीलता क्यों नहीं है, जितनी होनी चाहिए? तब हम नई पीढ़ी को आजादी की कीमत समझाने में सफल हो सकेंगे। अगर आज की नई पीढ़ी अपने तरीके से आजादी की परिभाषा गढ़ना चाहती है, तो यह उसका हक है। लेकिन जिन्होंने आजादी की लड़ाई में खुद को कुर्बान करके हमारे लिए स्वतंत्रता अर्जित की है, उन्हें यूं ही नहीं भूला जा सकता। पुरानी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह नई पीढ़ी को इसके महत्व और इसकी संवेदनशीलता को समझाए। यह पीढ़ी तेज है, त्वरित अंदाज में निर्णय लेती है, इसलिए अगर इस पीढ़ी को यह बात सही तरीके से बता दी जाए कि हमें जो आजादी हासिल है, वह लाखों लोगों के बलिदान और देशभक्ति का नतीजा है, तो नई पीढ़ी को आजादी का पाठ पढ़ाना और उसके लिए पर्याप्त संवेदनशील बनाना इतना मुश्किल नहीं होगा। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

प्रतिबंधित पत्रकारिता के अनसुने किस्से

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान सिर्फ आंदोलनकारी ही जेल नहीं भेजे गए बल्कि आंदोलन के समर्थन में पत्र-पत्रिकाएं निकालने वाले अनेक संपादकों को भी जेल में डाल दिया गया था। साथ ही अनेक अखबार या उनके विशेष अंक प्रतिबंधित कर दिए गए थे। ऐसे ही प्रतिबंधित अंकों की खोजबीन कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफेसर, संतोष भदौरिया ने उसे पुस्तक रूप दिया है, जिसका नाम है-अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता।

किताब भारत में स्वाधीनता आंदोलन के विकास की चर्चा से शुरू हुई है, जिसमें लेखक ने इसके विभिन्न चरणों के बारे में संक्षिप्त किंतु उपयोगी जानकारी दी है। इसमें लेखक ने स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न चरणों की विशेषताओं के साथ व्यावहारिक कमियों को भी उजागर किया है। साथ ही आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास का क्रमबद्ध तरीके से वर्णन किया है। लेखक ने अंग्रेजी राज में प्रतिबंधित, प्रेस अधिनियम के चलते बंद या आर्थिक अभाव की वजह से बंद हुई सभी पत्र-पत्रिकाओं का लगभग पूरा इतिहास खंगालने का प्रयास किया है।

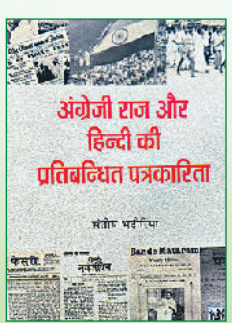

पुस्तक इस मायने में बेहद दिलचस्प है कि प्रतिबंधित पत्रिकाओं में छपे विचार, लेख, कविताओं के अंश भी इसमें दिए गए हैं, जिन्हें आज के समय में पढ़ना एक नए अनुभव से गुजरना है। उस दौर के लेखकों की क्रांतिकारी कविताओं को पढ़कर उस वक्त के भारतीय लोगों के मन में मौजूद राष्ट्रप्रेम के उफान को समझा जा सकता है। मिसाल के तौर पर 'बुंदेलखंड केसरी' में छपी एक कविता को देख सकते हैं, 'देख दशा भारत की हमने निश्चय मन में ठाना है। मातृभूमि की बलिवेदी पर निज बलिदान चढ़ाना है।' प्रतिबंधित पत्र-पत्रिकाओं के छपने के तमाम अनसुने किस्सों को पढ़कर यह पता चलता है कि किताब को लिखने के लिए लेखक ने शोध कार्य में कितना परिश्रम किया है। यह उनके परिश्रम का ही नतीजा है कि किताब ऐतिहासिक विषय पर आधारित होने के बावजूद कहीं भी बोझिल नहीं लगती है। यह पुस्तक उस दौर की प्रतिबंधित पत्रकारिता के क्रमिक इतिहास को सुगठित तरीके से प्रमाणित सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत करती है। *

किताबः अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता, **लेखकः** संतोष भदौरिया, **मूल्यः** 350 रुपए, **प्रकाशकः** लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज

विशेष: जन्माष्टमी, 16 अगस्त

पर्वोल्लास / धीरज बसाक

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को समर्पित जन्माष्टमी का पर्व पूरे देश में असीम श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर देश के कुछ प्रदेशों एवं प्रमुख कृष्ण मंदिरों में मनाए जाने वाले विशेष उत्सवों के बारे में यहां बता रहे हैं विस्तार से।

श्रद्धा-उल्लास से मनाया जाता है देश-विदेश में जन्माष्टमी पर्व

द्वारकाधीश मंदिर द्वारका, गुजरात

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा और वृंदावन है तो उनकी कर्मभूमि द्वारका है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन की अठखेलियां और रास लीलाएं बृज में कीं, तो द्वारका उन्हें द्वारकाधीश यानी द्वारका के राजा के तौर पर जानता है। भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि द्वारका में जन्माष्टमी उत्सव बहुत ही भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस दिन द्वारका के प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर को फूलों और दीयों से सजाया जाता है। इस दिन यहां के खास आकर्षणों में मंगला आरती और झूलन उत्सव प्रमुख हैं। जन्माष्टमी के दिन गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित द्वारका नगरी में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु और पर्यटक यहां इस मंदिर के जन्माष्टमी उत्सव में शामिल होते हैं। *

इंफाल की रास लीला, मणिपुर

देश का उत्तर-पूर्व भी कृष्ण भक्ति में डूबा रहने वाला भू-भाग है। विशेषकर मणिपुर में वैष्णो समुदाय, कृष्ण जन्माष्टमी को पारंपरिक रास लीला और विख्यात मणिपुरी नृत्य के विशिष्ट संयोजन के साथ मनाते हैं। इस दिन पूरे इंफाल में जगह-जगह रास लीलाओं का आयोजन होता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर इंफाल में आयोजित होने वाली रास लीला पूरी दुनिया में विख्यात है। इस रास लीला में भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत भक्तिपूर्ण ढंग से मंचन होता है और यह मंचन विशेष मणिपुरी नृत्य पर आधारित होता है। *

मुंबई का दही हांडी उत्सव, महाराष्ट्र

मुंबई में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव देश के दूसरे हिस्सों से बिल्कुल अलग जोश और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन महाराष्ट्र के लगभग हर शहर में और उसमें भी विशेष तौर पर मुंबई में हर गली में एक ऊंचे स्थान पर दो पेड़ों या दो इमारतों के बीच बंधी रस्सी में बीचों-बीच जहां चारों तरफ खुला मैदान होता है, बहुत ऊंचे एक हांडी बांधी जाती है, जिसमें दही, मिठाईयां और रुपए भरे होते हैं। कृष्ण के बाल सखा माने जाने वाले गोविंदा मानव पिरामिड का आकार बनाकर हवा में हांडी तक पहुंचते हैं और फिर इसे तोड़ते हैं। मुंबई में जन्माष्टमी के दिन गोविंदाओं की टोलियां दही-हांडी उत्सव में घूम-घूमकर हिस्सा लेती हैं और जब एक टोली हांडी तक नहीं पहुंच पाती, तो दूसरी टोली को उसके लिए मौका दिया जाता है। हांडी फोड़ने वाले मित्रमंडल/टोली को उत्सव का आयोजन करने वाली सोसायटी या मुहल्ला पुरस्कृत करता है। *

उडुपी श्रीकृष्ण मठ, कर्नाटक

दक्षिण भारत में कृष्ण भक्तों की श्रद्धा का एक महत्वपूर्ण केंद्र उडुपी है। जन्माष्टमी के दिन कर्नाटक के उडुपी स्थित उडुपी श्रीकृष्ण मठ में विशेष पूजा, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। मंदिर में कृष्ण लीला, नाटक, रथयात्रा और ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान पूरे उडुपी शहर में रात्रि जागरण का माहौल होता है। हर तरफ लोग कृष्ण भक्ति में डूबे दिखते हैं। रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद यह उत्सव अपने चरम पर पहुंचता है और फिर दिनभर भजन कीर्तन में रमे रहने वाले भक्तजन प्रसाद खाकर अपना उपवास-व्रत तोड़ते हैं। द्वारका की तरह ही उडुपी में भी जन्माष्टमी पर देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं। *

विदेशों में जन्माष्टमी उत्सव की छटा

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सिर्फ भारत में ही मनाया जाने वाला उत्सव नहीं है। यह एक वैश्विक उत्सव है। भारत के बाहर नेपाल, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों में भी भव्य जन्माष्टमी उत्सव मनाए जाते हैं। नेपाल के पत्थर गांव और काठमांडू स्थित कृष्ण मंदिरों में इस दिन भक्तों की भीड़ उमड़ती है और नृत्य, भजन संध्या तथा झूलों की परंपरा से उत्सव मनाया जाता है। बांग्लादेश में ढाका स्थित जैसोर में जन्माष्टमी को भव्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन यहां शोभा यात्रा, भगवत गीता पाठ और सांस्कृतिक नाटकों का मंचन होता है। फिजी, मॉरीशस और सूरीनाम में प्रवासी भारतीय समुदाय के लोग कीर्तन मंडलियों के जरिए कृष्णलीला का मंचन और भजन गाते हैं। इसके अलावा लंदन (ब्रिटेन) के इस्कॉन मंदिर, अमेरिका के न्यूयॉर्क, ह्यूस्टन और लॉस एंजिल्स आदि के इस्कॉन मंदिरों में भी जन्माष्टमी में भव्य सांस्कृतिक उत्सव मनाए जाते हैं। इसके साथ ही यूरोप में रूस, यूक्रेन, हंगरी और जर्मनी के इस्कॉन मंदिरों में भी कृष्ण जन्माष्टमी बहुत भव्य तरीके से आयोजित की जाती है। *

काठमांडू स्थित कृष्ण मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव

नया दौर / लोकमित्र गौतम

भगवान कृष्ण के प्रति भक्तिभाव रखने वालों के लिए तो वे पूज्य हैं ही। लेकिन उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण हैं, जो उन्हें आज के युवाओं के लिए भी आइकन बना देता है। इसीलिए देश-दुनिया के युवाओं में जन्माष्टमी की धूम दिखती है।

रील्स-मीम्स के दौर में युवाओं के ग्लोबल आइकन हैं श्रीकृष्ण

आज का दौर तेजी से बदलते दृश्यों और पल भर की लोकप्रियता का दौर है। यही कारण है कि आज बड़े-बड़े त्योहारों और उत्सवों का रंग भी नई पीढ़ी के सिर चढ़कर आसानी से नहीं बोलता। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसी रील्स और मीम्स के दौर में जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक और एक्स पर रील्स, मीम्स और वायरल ट्रेंड संस्कृति का नया चेहरा बन गए हैं, तब जन्माष्टमी दुनिया के लगभग 108 देशों में मनाई जा रही है। और हॉटस्टार जैसे टीवी चैनल जो कि पूरी तरह से खेलों और वेब सीरीज को समर्पित हैं, महीनों पहले से बार-बार विज्ञापन करते हैं कि जन्माष्टमी का कार्यक्रम सीधे प्रसारित किया जाएगा। अगर जन्माष्टमी जैसे पर्व के प्रति पूरी दुनिया में इस किस्म का आकर्षण उभर रहा है, तो इसका अर्थ केवल धार्मिक नहीं है बल्कि इसके पीछे सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल अनुकूलता का गहरा संबंध है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: हर साल भाद्रपद की अष्टमी को मनाया जाने वाला कृष्ण जन्म का पर्व जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति में पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं जन्माष्टमी की रात 12 बजे कंस की जेल में बंद बहन देवकी की कोख से एक दिव्य बालक श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं, जो धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रधार बनते हैं। आमतौर पर मंदिरों में भजन संकीर्तनों तक सीमित रहने वाले श्रीकृष्ण, आज की डिजिटल दुनिया में भरपूर स्वीकृत हुए है, तो इसके कुछ कारण हैं।

कृष्ण केवल भगवान नहीं, एक विचार हैं: आज का युवा सही मायने में वैश्विक नागरिक है। एक ऐसी दुनिया का नागरिक, जो अपनी पारंपरिक संस्कृति से अगर जुड़ना जानता है, तो उसकी बेड़ियों को तोड़ना भी जानता है। हां, यह जरूर है कि आज का युवा अपने करियर की चिंता में रहता है। आज का युवा रिश्तों में उलझा है और जीवन के नए अर्थ तलाश रहा है। आज का युवा सिस्टम से सवाल करता है। ऐसे में श्रीकृष्ण उसका मार्गदर्शन करते हैं। कृष्ण का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। कष्ट और संकटों के बीच जन्म, बचपन में वध के अनेक प्रयास, युवावस्था में युद्ध, राजनीति, मित्रता और प्रेम के भ्रम, फिर भी इन सारी परेशानियों और संघर्षों के बीच कृष्ण मुस्कुराते रहते हैं, नाचते रहते हैं और बांसुरी बजाते रहते हैं। यह इतना उद्दाम जीवन चरित्र है, जो दुनिया भर के, हर संस्कृति के युवाओं को अपनी ओर खींचता है। कृष्ण सीख देते हैं कि जियो और वह भी पूरी लय में, इसलिए वे युवाओं के चहेते बने हुए हैं।

संस्कृति की सॉफ्टपावर: एक तरफ कृष्ण का अद्भुत कैरेक्टर युवाओं को अपनी तरफ चुंबक के माफिक खींचता है, तो दूसरी तरफ जन्माष्टमी का ग्लोबल आकर्षण यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति सीमाओं में कैद नहीं है। यही वजह है कि आज न्यूयॉर्क से लेकर नैरोबी तक और लंदन से लेकर सिडनी तक कृष्ण भक्तों ने जन्माष्टमी को ग्लोबल फेस्टिवल बना दिया है। रासलीला, दही हांडी और कृष्ण जन्मोत्सव आज भारत की विदेशों में सांस्कृतिक पहचान है। सिर्फ पहचान ही नहीं, यह सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा भी है। जन्माष्टमी के गीत, डांस, कॉस्ट्यूम ट्रेंड और डिजिटल झांकियां अब डिजिटल आर्ट और क्रिएटिविटी का हिस्सा हैं। ये बदलाव साबित करते हैं कि कृष्ण ग्लोबल आकर्षण का विषय क्यों हैं? कृष्ण का विचार और कृष्ण का होना उस दौर में भी नया और आधुनिक था और इस दौर में भी नया और आधुनिक है। डिजिटल युग में कृष्ण की प्रासंगिकता पहले से ज्यादा बढ़ गई है।

कृष्ण की यूनिवर्सल अपील: श्रीकृष्ण केवल हिंदू धर्म के देवता भर नहीं हैं। वे एक फिलॉस्फर हैं, वे एक योद्धा हैं, वे एक प्रेमी हैं, वे एक दोस्त हैं, वे एक रणनीतिकार हैं और वे एक मेंटर भी हैं। हर संस्कृति में वह किसी न किसी रूप में फिट बैठते हैं। यही कारण है कि वह हर संस्कृति में स्वीकार्य हैं। *

कहानी / आशा शर्मा

स्वतंत्रता दिवस का यह मतलब कतई नहीं होता कि इस दिन को हम मौज-मस्ती करके बिता दें। राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर देशप्रेम से ओत-प्रोत ना हों। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद ना करें। राष्ट्रीय पर्व के महत्व पर केंद्रित कहानी।

आजाद वीकेंड

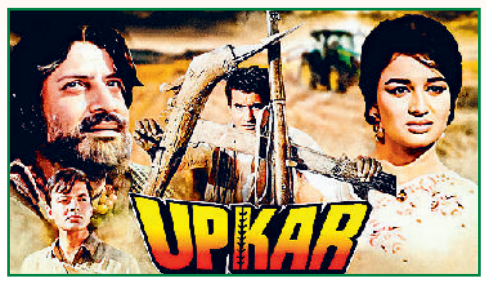

इस बार लंबा वीकेंड आ रहा है, क्यों न ऋषिकेश चलें? सुना है वहां की कैंप लाइफ बहुत शानदार होती है। खाना-पीना और नदी किनारे मस्ती... क्या कहते हो?' बिजी कॉर्पोरेट लाइफ से उकताई राजी को वास्तव में एक ब्रेक की जरूरत महसूस हो रही थी। 'लंबा वीकेंड? कब है यह सुनहरा अवसर?' साथी श्यामली ने चहकते हुए पूछा तो राजी ने टेबल पर रखा कैलेंडर उसके सामने कर दिया। शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस का अवकाश और उसके बाद शनिवार और रविवार... देखते ही श्यामली भी तुरंत तैयार हो गई। समीर और अयान तो जैसे अवसर की तलाश में ही थे। सबने शुक्रवार की सुबह ऋषिकेश जाने का कार्यक्रम बना लिया।

'लेकिन उस दिन तो ऑफिस में भी झंडारोहण होगा ना, उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?' अयान ने प्रश्न उठाया।

'क्या यार अयान...! एक तुम्हारे नहीं होने से क्या वहां का सारा प्रोग्राम कैंसल हो जाएगा? चिल करो यार। आजादी का जश्न मनाने ही तो जा रहे हैं हम लोग।' राजी ने बेपरवाही से कहा और उसके बाद सभी प्रश्न समाप्त हो गए। शुक्रवार यानी स्वतंत्रता दिवस की सुबह छह बजे चारों दोस्त कार से रवाना हुए। समीर गाड़ी चला रहा था, अयान उसकी बगल में बैठा था। राजी और श्यामली पीछे की सीट पर पालथी मारकर बैठी थीं।

सुबह की ठंडी हवा से अठखेलियां करते चारों बढ़े जा रहे थे। रास्ते में आने वाले गांवों में स्कूल जाते हाथों में तिरंगा लिए बच्चे सम्मोहित कर रहे थे। जगह-जगह स्कूल और अन्य प्रतिष्ठानों में देशभक्ति के गीत गूंज रहे थे। जोशीले गाने सुनकर श्यामली के रोम खड़े हो गए। शरीर में सिहरन सी दौड़ गई।

'क्या सचमुच लोग आजादी के लिए इतने दीवाने हो गए थे कि उन्हें मरने तक से डर नहीं लगा? हमें देखो! जरा सा भी दर्द बर्दाश्त नहीं होता।' श्यामली ने अचानक कहा तो सब उसे आश्चर्य से देखने लगे।

'जरूर हुए ही होंगे, आजादी क्या प्लेट में परोसी हुई मिली थी। मेरे दादा जी बताते थे कि उनके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी थे। नेताजी की आजाद हिंद फौज के सिपाही। आज भी उनकी तस्वीर हमारे घर में रखी है।' अयान ने गर्व से बताया और गर्दन घुमाकर बारी-बारी से सबकी तरफ देखा। उसे बाकी दोस्तों की आंखों में अपने लिए अतिरिक्त सम्मान दिखाई दिया। सबके मुंह आश्चर्य से टेढ़े हुए सो अलग। तभी अचानक समीर ने जोरदार ब्रेक लगाया। पीछे की सीट पर बैठी राजी और श्यामली का सिर आगे की सीट से टकरा गया।

'यह क्या पागलपन है समीर? ऐसे कैसे गाड़ी चला रहे हो? मरवाओगे क्या?' सब एक साथ चिल्लाए। 'वो अचानक सामने से वह लंगड़ा व्यक्ति आ गया था। अभी तो मर ही जाता!' कहते हुए झल्लाए समीर ने गाड़ी रोकी और लपक कर नीचे उतरा। देखा तो वह लंगड़ा व्यक्ति अभी भी उसी तरह सड़क के बीचों-बीच खड़ा था।

'मरोगे क्या? इस तरह कौन बीच सड़क पर खड़ा हो जाता है।' समीर उस भिखारी जैसे दिखने वाले बूढ़े दिव्यांग व्यक्ति पर चिल्लाया। वह व्यक्ति अपनी बैसाखी बगल में दबाए चुपचाप सावधान की मुद्रा में खड़ा रहा। अब तक बाकी तीनों भी वहां आ चुके थे। उन्हें भी यह देखकर हैरानी हुई कि उस व्यक्ति के चेहरे पर अभी-अभी घटित होने वाले एक्सीडेंट के बारे में सोचकर किसी भी प्रकार की घबराहट के निशान दिखाई नहीं दे रहे हैं। तभी उस व्यक्ति ने अपनी पोजीशन बदली और बैसाखी को ठीक से अपनी बांह के नीचे दबा लिया।

'सामने उस स्कूल में राष्ट्रगान की धुन बज रही थी ना, इसलिए मैं खड़ा हो गया। माफ करना लेकिन मैं अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के प्रति अपनी भावनाओं और उसके सम्मान को नजरअंदाज नहीं कर सका। आप लोगों को तो शायद पता भी नहीं होगा कि राष्ट्रगान के समय ध्वज के सम्मान में सावधान खड़ा होना चाहिए।' व्यक्ति ने कहा तो सबकी निगाहें झुक गईं। सच जानकर समीर को अपने व्यवहार पर बहुत दुःख हुआ। वह हाथ पकड़ कर उस व्यक्ति को सड़क पार करवाने लगा। तभी उस व्यक्ति ने अपनी बैसाखी हटाई और लकड़ी के सहारे अपने पांवों से चलने लगा। सब एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे। बूढ़े व्यक्ति का यह आचरण किसी के भी समझ में नहीं आया, किंतु वह व्यक्ति उनकी दुविधा समझ गया था।

'मैं भला आजादी की कीमत कैसे भूल सकता हूं। मेरे पिताजी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था और अंग्रेजों की गोली लगने से वे अपना एक पांव गंवा बैठे थे। उन्हीं को याद करते हुए मैं आज के दिन बैसाखी के सहारे चलता हूं ताकि उनकी कुर्बानी भूल नहीं जाऊं। आज की पीढ़ी को भले ही यह मजाक लगता होगा, लेकिन हमारी पीढ़ी के लिए यह दिन कितना महत्व रखता है, यह मैं बता नहीं सकता।' कहते हुए वह व्यक्ति भावुक हो गया। अब तक सब उसका हाथ थामे सड़क के दूसरी पार भी आ गए थे। सबकी निगाहें झुकी हुई थीं।

'मुझे लगता है हमें वापस जाना चाहिए। क्यों न आज के दिन हम कोई देशभक्ति की भावना वाली फिल्म देखें?' राजी ने नया प्रस्ताव रखा तो सब एक बार फिर से हैरान हो गए लेकिन तुरंत संभल भी गए।

'ठीक कहते हो लेकिन उससे पहले ऑफिस जाकर तिरंगे को सलामी देंगे।' अयान ने आगे जोड़ा तो सब एकमत हो गए और अब गाड़ी ऋषिकेश जाने की बजाय ऑफिस की तरफ दौड़ रही थी। *

बॉलीवुड ट्रेंड / अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों के आरंभिक दौर से ही देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। इन्हें एंटरटेनिंग बनाने के लिए काफी फिल्मी मसाले भी डाले जाते हैं। यही वजह है कि ऐसी फिल्मों को दर्शक भी खूब पसंद करते हैं। देशभक्ति पर आधारित कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

हिंदी फिल्मों में देशभक्ति के रंग

पंद्रह अगस्त हो या छब्बीस जनवरी, राष्ट्रीय पर्व आते ही देशवासियों में देश प्रेम और देशभक्ति की भावनाएं हिलोरे लेने लगती हैं। देश प्रेम की यह भावना हिंदी फिल्मों में भी खूब उभर कर आई है। यह बात अलग है कि समय के साथ हिंदी फिल्मों में देश प्रेम को व्यक्त करने के तरीके बदलते रहे हैं।

ब्रिटिश काल में हिंदी फिल्में

आजादी के पहले देशभक्ति पर आधारित तमाम फिल्मों में ब्रिटिश शासन को निशाने पर रखकर फिल्मकार देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनाते थे। उस दौर में सेंसरशिप सख्त होने के कारण वे सीधे-सीधे तो अंग्रेजों पर हमला नहीं कर सकते थे, लेकिन परोक्ष या सांकेतिक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदी फिल्में और उनके गीत स्वंतत्रता संग्राम का खूब समर्थन करते थे। इस संदर्भ में कवि प्रदीप का लिखा गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' प्रासंगिक है। यह गीत वैसे तो ब्रिटिश राज के विरुद्ध था, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों को इस गीत के बारे में बताया गया कि ब्रिटिश शासन का पक्ष लेकर विश्व युद्ध में उसके खिलाफ लड़ने वालों से कहा जा रहा है कि 'हिंदुस्तान हमारा' अर्थात ब्रिटिश शासन का है।

शुरुआती दौर की फिल्मों में देशभक्ति

आजादी के बाद एक-दो दशक तक बनने वाली देशभक्तिपूर्ण फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को ही ज्यादातर दिखाया जाता रहा। इन फिल्मों में दिलीप कुमार की 'शहीद' प्रमुख थी। उन दिनों शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और झांसी की रानी जैसे महान चरित्रों को केंद्र में रखकर सेल्यूलाइड पर देश प्रेम के रंग भरे गए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के विषय पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' जैसी सार्थक फिल्म बनाई।

देशभक्ति फिल्मों ने मनोज को बनाया भारत कुमार

भगत सिंह के चरित्र पर आधारित फिल्म 'शहीद' की सफलता के बाद मनोज कुमार को जैसे फिल्म निर्माण की एक अलग दिशा मिल गई। इसके चलते ही मनोज कुमार ने 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति', 'रोटी कपड़ा और मकान' जैसी कई फिल्में बनाईं, जो या तो देशभक्ति पर आधारित थीं या इन फिल्मों में कहीं न कहीं देश प्रेम की भावना घुली-मिली थी। इन फिल्मों को दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला। अपनी देशभक्ति आधारित फिल्मों की वजह से ही मनोज कुमार बॉलीवुड में 'भारत कुमार' के रूप में मशहूर हो गए।

बदल गया देशभक्ति फिल्मों का स्वरूप

आगे चलकर, खासतौर से भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद देशभक्ति की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण विषय भारत और पाकिस्तान का युद्ध और आतंकवाद बन गया। जे.पी. दत्ता ने भारत और पाकिस्तान युद्ध पर आधारित फिल्म 'बॉर्डर' का निर्माण किया। इस मल्टी स्टारर फिल्म को दर्शकों का खूब प्यार मिला। 'बॉर्डर' को कुछ हद तक 'हकीकत' की शैली में बनाने का प्रयास किया गया। इस फिल्म के गीत भी खूब लोकप्रिय हुए थे। जावेद अख्तर द्वारा लिखा गया फिल्म का गीत 'संदेसे आते हैं' उन दिनों खूब लोकप्रिय हुआ था। यह गीत 15 अगस्त, 26 जनवरी जैसे अवसरों पर आज भी बजाया जाता है।

निर्माता-निर्देशक अनिल शर्मा की सनी देओल और अमीषा पटेल को लेकर बनाई गई फिल्म 'गदर : एक प्रेम कथा' में भी भारत-पाकिस्तान एंगल था। 'हिंदुस्तान जिंदाबाद था, हिंदुस्तान जिंदाबाद है और हिंदुस्तान जिंदाबाद रहेगा' जैसे देशभक्ति से भरे डायलॉग्स ने फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उसके बाद आई आमिर खान की 'सरफरोश' में भी देशभक्ति का यही रंग था। इसमें आतंकी नेटवर्क के तार पाकिस्तान से जोड़कर दिखाया गया था। इस फिल्म को भी अच्छी सफलता हासिल हुई थी। हालांकि 'बॉर्डर' के बाद न तो जेपी दत्ता सफल हो पाए और न ही अनिल शर्मा बॉक्स ऑफिस पर गदर मचा सके। देशभक्ति पर आधारित उनकी 'रिफ्यूजी' और 'वीर' बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रहीं। हालांकि अनिल शर्मा की 'गदर 2' ने अच्छी सफलता हासिल की।

देशभक्ति फिल्मों का नया ट्रेंड

पिछले कुछ वर्षों से अक्षय कुमार को भारत कुमार की पदवी मिली हुई है। उनकी कई फिल्मों में देशभक्ति की भावना खूब नजर आती है। पाकिस्तान को कोसने, उसकी नापाक हरकतों और उसके आतंकी मंसूबों को भी अक्षय कुमार की कुछ फिल्मों में दिखाया गया है। 'केसरी', 'बेबी', 'एयरलिफ्ट', 'हॉलिडे' और 'रुस्तम' जैसी अक्षय कुमार कई फिल्मों में देशभक्ति के अलग-अलग रंग दिखे। हाल में आई 'केसरी 2' से वह एक बार फिर देश प्रेम की भावना दर्शकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं।

भारतीय युवाओं में क्रिकेट से लेकर राजनीति हर क्षेत्र में पाकिस्तान से आगे रहने और उसे पराजित करने की भावना को उभारने में भी फिल्मकारों को महारथ हासिल है। इसीलिए ऐसी फिल्में भी खूब बनती हैं। *